इकाई 25 फासिज़्म

इकाई की रूपरेखा

25.0 उद्देष्य
25.1 प्रस्तावना
25.2 फासिज़्म के सामान्य स्पष्टीकरण एवं लक्षण
25.3 फासिज़्म के विचारात्मक सूत्र (Strands)
25.4 फासिज़्म के सामाजिक आधार
25.4.1 युद्ध, कूटनीति और राष्ट्रवाद
25.4.2 1929 का आर्थिक संकट
25.4.3 फासिज़्म हेतु राजनीतिक संघटन
25.4.4 आधिपत्य और अवपीड़न का प्रष्न
25.5 फासिज़्म के अधीन राज्य और समाज
25.6 सारांष
25.7 शब्दावली
25.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
25.9 बोध प्रष्नों के उत्तर

25.0 उद्देष्य

प्रस्तुत इकाई का मूल उद्देष्य है – आपको फासीवादी विचारों यानी साम्यवाद-विरोधी आन्दोलन तथा चरम दक्षिणपंथी राजनीतिक संघटन के रूप में राज्यों के विकास का बोध कराना। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित बातों को समझ सकेंगे :

- फासिज़्म के कुछ सामान्य लक्षण तथा अधिनायकीय उद्देष्यों की प्राप्ति हेतु संघटन की प्रकृति;
- एकाधिक सैद्धांतिक विचार जिन्होंने फासीवादी राज्य और उसकी संगठनात्मक शैली के क्रमविकास में योगदान दिया;
- सामाजिक-आर्थिक शक्तियाँ जो कि फासिज़्म के उद्गमन हेतु उत्तरदायी रहीं; तथा
- फासीवादी शासन-प्रणालियों के अधीन राज्य और समाज।

25.1 प्रस्तावना

ज्ञानोदय की योजना ने दैवी स्वीकृति की धारणा पर आधारित समाज और राज्य की पुरातन व्यवस्था के समक्ष एक गंभीर चुनौती रख दी। 18वीं शताब्दी तक, प्रतिनिधित्व और चुने हुए प्रतिनिधियों के इर्द-गिर्द ही संगठित राज्य संबंधी धारणा जड़ पकड़ चुकी थी। इसने एक विषिष्ट राजनैतिक उद्देष्य की प्राप्ति हेतु आधुनिक राजनीति अथवा किसी विषिष्ट धारणा अथवा नीति के इर्द-गिर्द ही लोगों के संघटन का संकेत दिया। इस आधुनिक राजनीति के संस्थागत रूप थे – चुनाव, राजनीतिक दल तथा आधुनिक राजनीतिक संस्कृति के सभी प्रतीकों एवं भूषा वाले आधुनिक समाचार-पत्र, जिन्होंने एक आम जगह बनायी। इस बात ने उन्हें इस सार्वजनिक स्थल पर आने के लिए उपलब्ध राजनैतिक विकल्पों तथा एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने संबंधी समूचे विस्तार की ओर

प्रवृत्त किया। 19वीं शताब्दी के अंत तक इसने यूरोप के त्रिपक्षीय वैचारिक विभाजन में सुस्पष्ट और नियत आकार ले लिया। अन्तर्युद्ध काल के दौरान अनेक यूरोपीय देषों में उग्र दक्षिणपंथी संगठनों अथवा फासिज़्म को सत्ता में लाने वाली राजनीतिक संघटन प्रक्रियाओं को समझने के लिए उक्त कथन को मनोगत करना अत्यावष्यक है। 1870 के दषक पष्चात् एकाधिकार पूँजीवाद और परिणामी प्रचण्ड साम्राज्यवादी प्रतिद्वंदिताओं ने ही उग्र राष्ट्रवादी विचारधाराओं एवं युद्धप्रियता को उद्दीप्त किया। नए राजनैतिक प्रसंग में, राजनीतिक समर्थन हेतु अपील उन नई, भद्रोचित इतर-वर्ग (non-class) पहचानों के आधार पर दी गई, जो कि विषेष रूप से कार्यस्थल से बाहर थीं। परिणामतः, विलक्षण जन-निर्वाचक वर्गों का जन्म हुआ; जैसे – ''युद्धानुभवी सैनिक'', ''करदाता'', ''खेल-षौकीन'', अथवा महज ''राष्ट्रीय-नागरिक''। इन प्रछन्न सामाजिक मतभेदों के खुले संघर्ष में कायान्तरण को प्रथम विष्वयुद्धोपरांत यूरोप में दक्षिणपंथी फासीवादी तानाषाही की बढ़वार हेतु आवष्यक पृष्ठभूमि के रूप में भी अवष्य देखा जाना चाहिए। यह इकाई फासिज़्म के कुछ सामान्य लक्षणों से आरम्भ होती है और फिर फासिज़्म के सैद्धांतिक एवं सामाजिक आधारों का विवरण प्रस्तुत करती है।

25.2 फासिज़्म के सामान्य स्पष्टीकरण एवं लक्षण

फासिज़्म की व्याख्या बहुविध तरीकों से की गई है। एक पसंदीदा मार्क्सवादी नज़रिया है इसकी व्याख्या एकाधिकार वित्त पूँजी (monopoly finance capital) के एक उग्र, निरंकुष साधन के रूप में करना, जो कि वर्ग-संघर्ष के तीव्रीकरण काल और पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में तीक्ष्ण संकटकाल में श्रमिक अधिकारों पर निर्मम प्रहार के रूप में उभरा। एक अन्य व्याख्या फासिज़्म को प्रथम विष्वयुद्ध की बर्बरता और असभ्य अवस्था के परिणामों में सांस्कृतिक एवं नैतिक अभिभव के उत्पादन के रूप में देखती है। कार्ल पोलैन्यी कृत *द ग्रेट ट्रांस्फॉर्मेषन* के अनुसार, प्रथम विष्वयुद्ध ने 19वीं शताब्दी यूरोप की बुनियादों को ध्वस्त कर दिया और युद्ध-संघटन, सुविधाहीनता और विस्थापन द्वारा इंगित एक दीर्घ संकटकाल को उन्मुक्त किया। ऑस्वॉल्ड स्पैंगलर ने अपनी *डिक्लाइन ऑफ द वैस्ट* की रचना 1918 में की और सिद्ध किया कि पाष्चात्य सभ्यता, जो कि उद्योगवाद द्वारा अभिलक्षित है, 20वीं शताब्दी में पतन के कगार पर पहुँच चुकी थी। स्पैंगलर ने एक विकल्प के रूप में 'जीवन-दर्षन' का प्रचार करने के लिए आधुनिकता संबंधी तर्कणापरक प्रवृत्तियों की तीखी आलोचना की। विलहैम रीष, एक नव-मनोविष्लेषक अपनी 'मास-साइकॅलॅजि ऑफ़ फ़ैसिज़्म' में फासीवाद को नितांत स्नायु-संबंधी अथवा रोगात्मक आवेगों के परिणाम के रूप में स्पष्ट करते हैं, जो कि पितृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था में प्रस्तुत अवस्था में रहते हैं। एक अन्य उदारवादी व्याख्या फासीवाद को जन समाज के एक उत्पाद के रूप सामने रखती है जहाँ नातेदारी, धर्म, व्यवसाय या श्रेणी एवं आवास पर आधारित परंपरागत असली पहचानें खत्म हो जाती हैं और एक नए आकारहीन जन-समाज का जन्म होता है। कुछ अन्य जन इसे एकाधिकार व्यापार-गृहों के लाभ-उद्देष्य के विरुद्ध मध्यवर्गीय अतिवाद की एक अनोखी अभिव्यक्ति से जोड़ते हैं। अन्ततः, इसको किन्हीं विषेष वर्ग-हितों अथवा वर्ग-प्रभुत्व से स्वतंत्र किसी करिष्माई नेता के नेतृत्व में एक प्रकार के बॉनापार्टिज़्म (Bonapartism) अथवा एक स्वायत्त सत्तावादी राज्य के रूप में देखा गया है।

फासीवाद उदारवाद, लोकतंत्र एवं मार्क्सवादी समाजवाद के परित्यजन पर आधारित एक क्रांतिक आन्दोलन के रूप में सामने आया। तथापि, यह रूढ़िवादी सत्तावादी समूहों से भिन्न था। रूढ़िवादी दक्षिण-पंथ ने पारंपरिक वैधताओं का आह्वान किया जो कि चर्च, राजतंत्र, नातेदारी आदि पर निर्भर थीं, जबकि फासीवादी एक क्रांतिक सांस्थानिक परिवर्तन चाहते थे और लोगों को आंगिक राष्ट्रवाद (Organic Nationalism) के नाम पर संगठित

करते थे, जो कि अन्य सभी प्रकार की मानव-पहचानों से ऊपर विषेषाधिकार प्राप्त राष्ट्र की सुसंगत सामूहिकता में एक विष्वास है। जैसा कि मानव-षरीर में होता है, शरीर के विभिन्न अवयवों अथवा अंगों का एक दूसरे से संरचनात्मक संबंध सिर्फ़ उनकी भूमिकाओं को परिभाषित करने और सीमा-निर्धारण करने का उद्देष्य पूरा करता है, अतः फासीवादी राज्य के आंगिक दृष्टिकोण में, राज्य राष्ट्रीय साकार रूप में व्यक्तिजनों की पहचानों और अधिकारों पर पूर्ववर्तिता कायम करेगा। यह दृष्टिकोण अन्तरराष्ट्रीयवाद और अन्तरराष्ट्रीयवाद पर आधारित आन्दोलनों, जैसे – साम्यवाद, फ्रीमैसनरी (मुक्त राजगीरी), लीग ऑफ नेषन्ज़ तथा बहुराष्ट्रीय यहूदी समुदाय, के प्रति फासिज़्म की पक्की शत्रुता हेतु भी ज़िम्मेदार है। आमतौर पर, फासिज़्म ज्ञानोदय व उसके विचारों, जैसे – हेतुवादी भौतिकवाद, व्यक्तिवाद और बहुवाद का सिद्धांत, से विरासत में मिली राजनीतिक संस्कृति के परित्यजन का प्रतीक है। लोकतांत्रिक-बुर्जुआई संस्थाओं एवं मूल्यों के प्रति फासीवादी विरोध-प्रदर्षन ने राजनीति के व्यापक, संवैधानिक तथा जनमत-संग्रह आदि रूपों के प्रयोग को वर्जित नहीं किया, अपितु उन्होंने इन लोकतांत्रिक संस्थाओं का प्रयोग केवल उन्हें अन्दर ही अन्दर नष्ट करने और उनकी महत्ता को गुप्त रूप से क्षति पहुँचाने के लिए किया। फासिज़्म अपने सभी रूपों में बहुलवाद, वैयक्तिक स्वायत्तता तथा नागरिक व राजनैतिक अधिकारों का सम्मान किए जाने पर आधारित लोकतंत्र की धारणा का विरोध करता था।

फासीवादियों का जन-संघटन राजनीति के सैन्यकरण प्रतिमान पर आधारित था। उन्होंने अपने संघटन में सैन्य प्रतीक और परिभाषिकी का प्रयोग किया। जिस प्रकार सैन्य-संगठन अधिकार व आदेष के बहुत्व अभाव और हाईकमान के प्रति सामान्य सैनिक समुदाय के पूर्ण अधीनीकरण पर आधारित होता है, उसी प्रकार फासिज़्मी संगठन भी पवित्रप्राय प्रतिमूर्ति स्वरूप अपना नेता रखते थे – इटली में ड्यूस (Duce) और जर्मनी में फ़्यूरर (Fuhrer) जिसकी इच्छा सभी मामलों में सर्वोच्च होती थी।

राष्ट्रवाद की भावना को मज़बूत करने के लिए और अपनी तानाषाहियों के विरोध को पूरी तरह समाप्त कर देने के लिए एक पार्टी सहायक सेना का प्रायः प्रयोग किया जाता था। फासिज़्मी विचारधारा में पुरुषोचित सिद्धांत, अर्थात् पुरुष-प्रधानता और युवाओं के उत्कर्षण पर अत्यधिक ज़ोर दिया जाना भी राजनीति के इसी सैन्यकरण से संबंधित था।

फासिज़्म का एक अन्य महत्त्वपूर्ण लक्षण था – एक प्रकार के नियमित, वर्ग-सहयोगवादी, एकीकृत राष्ट्रीय-आर्थिक प्राधार का संगठन। एक वर्ग-संघर्ष से मुक्त जन-समुदाय के रूप में समष्टिवाद (Corporatism) की धारणा व्यक्तिवाद की बढ़वार और नए सिरे से केन्द्रकृत होते राज्यों के प्रति अनुक्रिया स्वरूप ही उभरी। यह निजी दायित्वों के निगूढ़ (mystical) 'समाधिकार' संबंधी सामन्तिक विचारधारा का एक अवषिष्टांष (residue) था। परन्तु धीरे-धीरे इसने एक आधुनिक, वर्ग-सहयोगवादी रूप अख़्तियार कर लिया। सामाजिक समष्टिवाद की विचारधारा नगर-निगमों/पालिकाओं को पूर्ण स्वायत्तता दिए जाने में विष्वास करती थी, परन्तु फासीवादी विचारधारा राज्य की आवष्यकताओं एवं अपेक्षाओं के प्रति नगर-निगमों/ पालिकाओं के संपूर्ण अधीनीकरण पर ज़ोर देती थी।

बोध प्रष्न 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) वे कौन से विभिन्न दृष्टिकोण हैं जो कि फासिज़्म को समझने से सम्बन्धित हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) फासिज़्म और रूढ़िवादी दक्षिण पंथी अधिनायकवाद के मध्य भेद कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

25.3 फासिज़्म के विचारात्मक सूत्र (Strands)

वैचारिक स्तर पर, ऐसा कोई एक एकीकारी विचार नहीं था जिसने फासीवादी आन्दोलन और राज्य को निर्दिष्ट किया हो। फासीवाद विभिन्न विचारों से विजातीय ऋणदानों से उत्पन्न हुआ। फासीवाद का मूल अवयव, जैसा कि हमने ऊपर देखा, एक प्रकार की सावयव (organic) राष्ट्रवाद और मार्क्सवाद-विरोधी विचारों का संप्लेषण (synthesis) था। सहजबोध, कार्यषक्ति एवं जीवनषक्ति पर आधारित कार्रवाई संबंधी सोरेल के सिद्धांत का प्रभाव भी फासीवादी जन-संघटन के प्रतिमान में समझने योग्य था। फासीवादियों ने समाज के विकास हेतु डार्विन के विचारों को भी लागू करने का प्रयास किया। उनका विष्वास था कि समाज में लोग उत्तरजीविता के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं और केवल श्रेष्ठतर व्यक्तिजन, समूह एवं प्रजातियाँ ही सफल होती हैं। इस धारणा ने यहूदी-विरुद्ध राजनीति अथवा सामीवाद (Semitism) -विरोध का प्रत्यक्ष पोषण किया, जो मुख्य रूप से जर्मन फासीवाद, बल्कि और जगह भी, अपनाया जाता था। सामाजिक क्षेत्र में डार्विन के विचारों का ऐसा प्रयोग 'सामाजिक-डार्विनवाद' कहलाने लगा। *मेन काम्प* (1924) में हिटलर के आत्मवृत्तात्मक कथन ने इस प्रकार के सामाजिक-डार्विनवादी प्रजातीय विचारों के व्यवहार हेतु सुस्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। इस पुस्तक में हिटलर ने संसदीय लोकतंत्र को पापकर्म बताया, जो कि 'प्रकृति के मूल अभिजातीय सिद्धांत' के विरुद्ध है और समग्र मानव संस्कृति का वर्णन रचनात्मक आर्य प्रजाति के अनन्य उत्पाद के रूप में किया और निकृष्ट एवं रचनात्मकता का अभावग्रस्त बताकर यहूदी समुदाय की निंदा की। जर्मनी में नाज़ी विचारधारा के इस पागलपन से लाखों यहूदियों का जनसंहार जन्मा, यहाँ एक निकृष्ट अमानुष जाति के रूप में वर्गीकृत जनता के पूरी तरह नैर्व्यक्तिक अधिकारीतंत्रीय 'निर्मूलन' (impersonal bureaucratic extermination) को व्यवहार में लाया गया।

राजनीति सिद्धान्ती कार्ल ष्मित ने 1920 के दषक में संसदीय लोकतंत्र संबंधी अपनी आलोचनाओं में एक जनमत संग्रही तानाषाही हेतु तर्क दिया। दार्षनिक मार्टिन हीडैगर ने अपनी प्रौद्योगिक हिंसा हेतु और अस्तित्व की अवमानना हेतु आधुनिकता की कड़ी आलोचना की। अनेक तरीकों से, दक्षिण पंथ के सिद्धांत 1930 के दषक में फासीवादी और नाज़ी क्षेत्र के लिए औचित्य साधन बन गए।

इटली में फासिज़्म तीन विभिन्न प्रवृत्तियों की ओर बढ़ने के कारण उत्पन्न हुआ। युद्ध में इटली की भागीदारी के मुद्दे पर 1914 में श्रमिक संघों का उग्र श्रमिकसंघवादी परिसंघ में विभाजन हो गया। श्रमिक-संघवादियों का कारखाना स्तर पर विनियमन के माध्यम से 'उत्पादकों' की 'आत्म-मुक्ति' में विष्वास था। किसी मुनासिब वक़्त पर श्रमिक संघ अथवा मज़दूर यूनियनें राज्य का स्थान ले लेंगी और वे ही स्व-षासन के साधनों के रूप में काम करेंगी। अब दक्षिण-पंथी श्रमिकसंघवादी जन उग्र राष्ट्रवाद की ओर चल पड़े। उन्होंने राष्ट्रों का वर्णन वर्गों के रूप में किया, यथा 'धनिकतंत्रीय' अथवा उपनिवेष रखने वाले या फिर 'सर्वहारा वर्ग' अथवा उपनिवेष न रखने वाले 'विपन्न' राष्ट्रों के रूप में। इटली को एक श्रमजीवी राष्ट्र बताया गया। भविष्यवादियों ने जिन्होंने परंपरागत प्रतिमानों एवं विद्यमान संस्थाओं को अस्वीकार कर दिया और 'हिंसा' को बढ़ावा दिया, और जो गति, शक्ति, मोटरों व मषीनों अथवा सभी आधुनिक प्रौद्योगिकीय संभावनाओं के वषीभूत थे, एक दूसरे बड़े वैचारिक कारक का योगदान दिया। 'राष्ट्रीय क्रांति' पर मुसोलिनी का 'समाजवादी' दृष्टिकोण एवं विचार इतावली फासीवाद का तीसरा बड़ा सूत्र था। स्थानीय राजनीतिक अनिवार्य आवष्यकताओं के साथ-साथ विचार की यह विषमजातीयता ही फासीवाद के रूप में भिन्नताओं के लिए ज़िम्मेदार थी, यथा आन्दोलन और राज्य।

25.4 फासिज़्म के सामाजिक आधार

आगामी भागों में हम राजनीतिक व सांस्थानिक बलों के उस स्वरूप पर चर्चा करेंगे जिसमें फासीवादी आन्दोलन और राज्य के विकास में मदद की और उसे कायम रखा।

25.4.1 युद्ध, कूटनीति और राष्ट्रवाद

प्रथम विष्वयुद्ध ने फासिज़्मी राज्य के स्पष्ट और नियत आकार लेने हेतु समाजषास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक दषाएँ प्रदान कीं। उसने जन-संघटन और आर्थिक संसाधनों में राष्ट्रवाद की क्षमता को उद्घाटित किया। इसके अलावा उसने आधुनिक राज्य की सेवा में आदेष की, प्राधिकार की अभिन्नता, तथा नैतिक संघटन व प्रचार के महत्त्व को भी दर्षाया। युद्ध के पष्चात्, फासिज़्म एक संसक्त एवं पुनर्संगठित जन-सामाजिक दृष्टिकोण के रूप में उभरा, जो कि शारीरिक बल, हिंसा व क्रूरता की पूजा को उजागर करते हुए गीतों की एक समग्र साम्प्रदायिक उपासना पुस्तिका और मषाल-जुलूस के आधार पर संघटित था।

वैरसायी में विजयी सहबद्ध (Allied) शक्तियों ने जर्मनी से हार की शर्तों को लादने का प्रयास किया। जर्मनी पर कठोर क्षतिपूर्तियाँ थोपी गईं। जर्मनी की सेना में मात्र एक लाख सैनिक रह गए। जर्मनी को अपने अधिकार वाले सीमाक्षेत्रों के लिहाज से भी नुकसान हुआ जिनमें उनके उपनिवेष हाथ से निकल जाना भी शामिल था। नवनिर्मित सीमाओं पर मित्र राष्ट्रों की शान्ति शर्तों की कठोरता पर असंतोष तथा विवादों और टंटों ने भावी संघर्षों के बीज बो दिए। प्रतिद्वंद्वी के दावों पर फैसला सुनाने और विवादों को हल करने हेतु कार्यप्रणाली ही अस्तित्व में नहीं थी। राष्ट्रसंघ के पास शान्तिपूर्ण समाधान लागू करने हेतु कार्यकारी शक्तियों का अभाव था। हिटलर ऑस्ट्रिया के साथ एक होने और जर्मन जनता

के लिए पर्याप्त 'निर्वाह स्थान' (लिबेनसौम) प्राप्त करने के लिए सैन्य बल प्रयोग करने को तैयार था। इतालवी फासिज़्म ने एक 'सर्वहारा' इटली हेतु उपनिवेषों का दावा किया। जापानी सैन्यवादियों ने 'विष्व संसाधनों के न्यायसंगत वितरण' की माँग की और वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सैन्य कार्रवाई किए जाने का पक्ष लिए जाने की इच्छा रखते थे। राष्ट्रवाद, युद्ध और कूटनीति ने राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर व्यक्तियों एवं जनसमूहों पर दबाव डाला कि अपना पक्ष निर्धारित कर लें। इसने जन लोकतांत्रिक स्थान को सीमाबद्ध किए जाने की संभावना भी पैदा कर दी। किसी भी व्यक्ति अथवा समूह को 'राष्ट्रीय शत्रु' अथवा 'देषद्रोही' के रूप में पहचाना जा सकता था और फासीवादी 'राष्ट्रीय' राज्य हेतु राजभक्ति अथवा निष्ठा न रखने के लिए समाप्त कर दिया जाता था। इससे पूर्व पराजय का दोष फासीवादी प्रचार में इन्हीं तत्त्वों के विष्वासघात को दिया जाता था।

25.4.2 1929 का आर्थिक संकट

प्रथम विष्वयुद्ध भौतिक एवं मानवीय दोनों संसाधनों और इस प्रकार उसमें शामिल समाजों की उत्पादन क्षमताओं के व्यापक विध्वंस में परिणत हुआ। युद्धोपरांत यूरोप में पुनर्निर्माण और 'पुनरुद्धार' के लिए वित्त अमेरिका से मिले ऋणों से जुटाया गया। यह प्रक्रिया कृषि मूल्यों में तेज़ी से गिरावट पर अमेरिका में संकट शुरू होने तक सहज रूप से चलती रही। जैसे ही विष्व कृषि उत्पादन यूरोप में 'पुनरुद्धार' के साथ बढ़ने लगा, उत्तर अमेरिका पर मूल्यों में तेज़ गिरावट से मार पड़ी और कई लोग दिवालिया हो गए। शीघ्र ही, अक्तूबर 1929 में, अमेरिका में शेयर बाज़ार प्रभावित हुए। बाज़ारों के भूमण्डलीय एकीकरण के परिणामस्वरूप हुई इस तबाही ने सभी अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित किया।

लाखों लोगों को नौकरियों से निकालकर और उत्पादन को रोक कर बाग़ान, फार्म और कारखाने बंद कर दिए गए। उद्योगपति जिन्होंने बैंकों और वित्तीय संस्थानों से अग्रिम राषि अथवा ऋण लिए हुए थे, चुकाने में दिक्कत महसूस की। अनेक बैंक और वित्तीय संस्थाएँ दिवालिएपन के कगार पर आ गईं। लाखों लोगों के नौकरियों और कारखानों से निकाल दिए जाने से माल और सेवाओं हेतु कोई माँग ही न रही, क्योंकि लोगों की क्रय-षक्ति में गिरावट आ गई थी। इन अर्थव्यवस्थाओं ने पुनरुद्धार के कोई आसार नहीं दर्षाए। ऐसी परिस्थितियों में फासीवादी नेताओं द्वारा अनुमोदित पुनर्सैन्यीकरण ने न सिर्फ़ सेनाओं में, बल्कि आयुध उद्योगों में भी रोज़गार अवसर पैदा किए। चूँकि इससे माल और सेवाओं के लिए माँग में तेज़ी आयी, फासीवादी कार्यक्रम ने संकटों से घिरे लोगों से अपील की – खासकर जब उसने उनके 'राष्ट्रीय गौरव' का भी विष्वास दिलाया।

25.4.3 फासिज़्म हेतु राजनीतिक संघटन

इटली में फासीवादियों का आरंभिक कार्यक्रम जो *फासी दी कॉम्बैटिमैण्टो* (1919) के रूप में शुरू किया गया, में एक गणतंत्र की स्थापना हेतु आह्वान किया गया और आमूल लोकतांत्रिक व समाजवाद संबंधी सुधारों हेतु माँगों को प्रकट किया गया, जिनमें शामिल थे – पूँजीपतियों के बृहद् युद्धकाल लाभों का सरकारीकरण, बड़ी संयुक्त-षेयर कम्पनियों का गोपन और भूमिहीन किसानों के लिए ज़मीन। कार्यक्रम के ये वामपंथी तत्त्व 1920 में छोड़ दिए गए और केवल तीक्ष्ण देषभक्ति, युद्ध-समर्थन, राष्ट्रीय महानता को महत्त्व और समाजवादी पार्टी के प्रति विमुखता का एक भावोत्तेजक मिश्रण ही कायम रखा गया। सरकारी अधिकारियों और सेना के समर्थन और गुप्त सहयोग के साथ फासीवादी गुटों का जन्म लेना वामपंथ की वास्तविक अथवा काल्पनिक सुखप्रद घटनाओं से सीधे जुड़ा था। सेना अधिकारियों, दफ्तरषाहों और व्यवसायियों जैसे परंपरागत रूढ़िवादी आभिजात्यों के समर्थन का लाभ उठाया गया और फासीवादी पार्टी और राज्य पर उसकी छाप छोड़ी गई। एक व्यापक जन-संघटन लाने के लिए फ़ौजी ढंग की नागरिक सेना, अर्ध-सैनिक मत-

प्रचार ढंग के संगठन तथा दलों में संगठित फासीवादी श्रमजीवी संघों को भी जन्म दिया गया। इस पार्टी और उसकी मुख्य परिषद् ने इन सभी संगठनों का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया।

इसी प्रकार, जर्मनी में अतिराष्ट्रवादी मनोभाव और जनवादी क्रांतिक माँगों का व्यापक राजनैतिक आधार प्राप्त करने के लिए हिटलर के फासीवादी संगठन जर्मन नैषनल सोषलिस्ट वर्कर्स पार्टी (NSDAP) द्वारा प्रयोग किया गया। इसने एक वृहत्तर जर्मनी का आह्वान किया जिसके पास भू-प्रदेष व उपनिवेष हों, साथ ही, वैरसाइ-संधि का अभिषून्यन (annulment) हो, बड़े एकाधिकार व्यवसायों का राष्ट्रीयकरण हो, बड़े उद्योगों में लाभ की हिस्सेदारी हो, अनर्जित आयों का उन्मूलन हो और कृषिक सुधार हों। जर्मन फासीवाद ने 1929 के महाअवसाद और जर्मन अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभाव द्वारा बढ़ती व्याकुलता का लाभ उठाया। उन्होंने वाइमर गणतंत्र की राजनीतिक अस्थिरता का भी लाभ उठाया, जिसका अपना ही संविधान उसे अन्दर से मटियामेट कर देने के साधन रूप में प्रयोग किया गया। इन सब कारकों ने नाज़ी पार्टी के उदय हेतु परिस्थितियाँ पैदा कर दीं, जो कि जर्मन फासीवाद का संगठन था। इसमें उन देषभक्त जर्मनवादियों के लिए एक विषेष आकर्षण था, जिनके राष्ट्रीय गौरव को प्रथम विष्वयुद्ध में जर्मनी की हार और वरसाइ में तदन्तर मानमर्दन द्वारा क्षति पहुँची थी।

25.4.4 आधिपत्य और अवपीड़न का प्रष्न

फ़्युरर अडॉल्फ हिटलर से जुड़े जर्मन फासीवादी राज्य ने अपने आप ही सर्वाधिक बर्बर और विध्वंसकारी शासन होने की विषिष्टता प्राप्त कर ली थी, जिसने योजनाबद्ध व्यापक हत्याओं और नरसंहार के अंजाम देने के लिए औद्योगिक तकनीकें अपनायीं। गुप्त राज्य पुलिस कार्यालय यथा *गैस्टैपो,* जैसा कि उसे जर्मनी में पुकारा गया, का जन्म 1933 में प्रष्यिन स्वदेषी मंत्रालय के तत्त्वावधान में हुआ, और उसने शीघ्र ही प्रांतीय सरकार से स्वायत्तता प्राप्त कर ली। 1934 से हाइनरिष हिमलर आतंक के इस राष्ट्र-व्यापी फासीवादी अंग के प्रमुख बन गए। इसके प्रष्यिन खण्ड के प्रमुख थे राइनहार्ड हेड्रिच, जो कि भयकारी एस.एस. (SS) से सम्बद्ध एक पार्टी गुप्तचर संगठन एस.डी. (SD) के प्रभारी भी थे। मुखबिरों के एक राष्ट्र-व्यापी जाल के साथ यह जर्मन फासीवादी राज्य का आन्तरिक अनुषासिक अधिषासी बन गया। आतंक के इस प्रकार के संगठनों को प्रत्येक जर्मनवासी की ज़िंदगी और मौत का सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गया था। फासीवादी राज्य के किसी भी विरोध को निष्ठुरता से दबा दिया जाता था। परम सत्ता फ़्युरर के हाथों में संकेन्द्रित थी। नज़रबंदी षिविरों के माध्यम से कंजरों, यहूदियों और राजनीतिक विरोधियों को पूरी तरह मिटा डालने के लिए युक्तियुक्त दफ़्तरषाह कार्यतंत्र का प्रयोग फासीवादी राज्य का एक सुविदित पहलू है। ये सब बातें राज्य सत्ता के दमनकारी तंत्र पर फासीवादी राज्य की अत्यधिक निर्भरता की ओर इषारा करती हैं। इसी प्रकार, इटली, स्पेन व अन्य फासीवादी शासन-प्रणालियों में नागरिक समाज की लोकतांत्रिक संस्थानों को ध्वस्त करने और उनके स्थान पर तानाषाहों के निजी आदेष पर आधारित सांस्थानीकृत अधिनायकत्व स्थापित करने का हर संभव प्रयास किया गया। इन सब बातों ने नागरिक समाज को अधिकाधिक अनुषासित किया जाना आवष्यक बना दिया। कुछ विद्वान तो फासिज़्म को 'सर्वसत्तात्मक राज्य' अथवा एक ऐसा राज्य तक बताते हैं, जो अपने नागरिकों के जीवन पर दिन-प्रतिदिन नियंत्रण रखता है। परन्तु आधिनायकीय शासन के बावज़ूद फासिज़्म ने कुछ सम्मति-निर्माण परीक्षणों का उपयोग किया। वैचारिक स्तर पर, राष्ट्रवादी भावनाओं और सामीवाद-विरोध प्रयोग को भी उसके पीछे लोगों की स्वीकृति प्राप्त थी।

इसके अलावा, कुछ नए तरीके भी प्रयोग किए गए। 1925 में, इटली में फासीवादी राज्य ने ऑपेरा *नाज़ीनाले डोपोलावोरो* की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देष्य था कामगार लोगों के लिए फुरसत का समय आयोजित करना। उसने स्थानीय क्लबों और पुस्तकालयों, मद्यषालाओं, बिलियर्ड कक्षों व क्रीड़ा-प्रांगण वाली मनोरंजनात्मक सुविधाओं का विषाल जाल फैला रखा था। डोपोलावोरो समाज संगीत गोष्ठियों, नाटकों, फिल्म शो, आदि की व्यवस्था करते थे और बच्चों के लिए पिकनिक व सस्ती गर्मियों की छुट्टियाँ आयोजित करते थे। तीस के दषक तक इटली में ऐसे लगभग 20,000 समाज बन चुके थे।

इसके अतिरिक्त, यद्यपि 1926 का श्रमिकसंघीय कानून (सिंडिकल लॉ) श्रमिकों को उत्पादन के हित में राज्य के नियंत्रण में ले आया और उसने नियोक्ताओं के साथ मोलभाव के अपने एकाधिकार में फासीवादी श्रमजीवी संघों का अनुमोदन किया व हड़तालों पर प्रतिबंध लगा दिया; फासीवादी राज्य ने तीस के ही दषक में श्रमजीवियों के लिए कुछ कल्याणकारी योजनाएँ भी शुरू कीं। 1934 में परिवार भत्ते दिए गए, जो कि आमतौर पर 40 घण्टे का सप्ताह लागू किए जाने से होने वाली आय की क्षति की भरपाई के लिए था। बीमारी और दुर्घटना हेतु बीमा वेतन समझौते में शामिल कर लिया गया और तदोपरांत इसी दषक में क्रिसमस बोनस और अवकाष वेतन भी शुरू किए गए। इस प्रकार के सभी कदमों का अभिप्राय था, राज्य की वैधता को स्थापित करना जिसने कि नागरिक अधिकारों व लोकतांत्रिक अधिकारों का उन्मूलन कर दिया था। इटली के मुकाबले, नाज़ी-षासन के तहत जर्मन श्रमिक कहीं अधिक सख्ती से अनुषासित थे।

बोध प्रष्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) व्याख्या करें फासिज़्म के विकास में किन वैचारिक सूत्रों का योगदान रहा।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) इतालवी फासिज़्म जर्मन फासिज़्म से किस प्रकार भिन्न था?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

25.5 फासिज़्म के अधीन राज्य और समाज

फासीवादी राज्य वैयक्तिक तानाशाही के सांस्थानीकरण के रूप में उदित हुआ। इटली में, अक्तूबर 1926 में सभी विपक्षी दलों और संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। जन सुरक्षा कानून (1926) ने राज्य की सुरक्षा को व्यक्तिगत अधिकारों से ऊपर रखा। फासिस्ट पार्टी को स्वयं ही अधिकारीतंत्रीय बना दिया और श्रमिकसंघवादी विचारों को पार्टी के भीतर ही दबा दिया गया। उत्तरी इटली के अनेक उद्योगपतियों ने जिनमें फिएट कम्पनी, जिओवानी ओइनयेल भी शामिल थे, मुसोलिनी के फासीवादी संगठन को खूब पैसा दिया। निजी पूँजी श्रमिकों के फासीवादी नियंत्रण की लाभग्राही होती थी। ''निगमित राज्य'' की स्थापना 1934 में नियोक्ताओं व कर्मचारियों के 22 संयुक्त निगमों को लेकर की गई, परन्तु उनके पास आर्थिक निर्णय लिए जाने की वास्तविक शक्ति का अभाव था। इतालवी राष्ट्र के आर्थिक जीवन में राज्य हस्तक्षेप फासीवादी शासन के शुरुआती हिस्से में उपान्तिक ही था। महाअवसाद और अपनी आक्रामक राष्ट्रवादी-सैन्यवादी परियोजना हेतु साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने की आवष्यकता ने विषेष रूप से भूमध्य सागर और अफ्रीका में आर्थिक जीवन में राज्य हस्तक्षेप को बढ़ाने की ओर प्रवृत्त किया। 1930 में औद्योगिक पुनर्निर्माण संस्थान् (IRI) और इंस्त्यूतो मॉबिलिएर इतालियानो (IMI) की स्थापना ने आधुनिक युद्धकार्य सेवा में आर्थिक नियमन को प्रकट किया। तथापि, 1940 में भी औद्योगिक पुनर्निर्माण संस्थान् के पास इतालवी उद्योग की कुल पूँजीगत परिसम्पत्तियों का लगभग 17.8% ही था। राज्य ने खासतौर पर रासायनिक, विद्युत् एवं यंत्र उद्योगों के विकास पर ध्यान दिया और रेलपथ तथा दूरवाणी व आकाषवाणी उद्योग के वैद्युतीकरण के माध्यम से आधुनिकीकरण को प्रोत्साहन दिया। तथापि, जर्मनी के मुकाबले, इटली के ''युद्ध का एक स्थायी राज्य'' होने संबंधी शासन के शब्दाडम्बर के बावज़ूद सैन्य-उत्पादन में निवेष कम ही था। इसके अतिरिक्त, एकाधिकार पूँजीवादी वर्ग के पूर्व उग्र दोषारोपणों के बावज़ूद, फासीवादी राज्य ने उत्पादक संघीकरण और न्यासीकरण, यथा वृहद् संघों के निर्माण में मदद की।

मुसोलिनी ने चर्च को भी खुष करने का प्रयास किया। युद्ध से क्षतिग्रस्त गिरजाघरों की मरम्मत के लिए बड़ी-बड़ी आर्थिक सहायतायें दी गईं। 1923 में सभी माध्यमिक विद्यालयों में धार्मिक षिक्षा अनिवार्य कर दी गई। रोम की समस्या अन्ततः 1929 में हल हो गई। चर्च के साथ लैटरन समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके माध्यम से धार्मिक षिक्षा का वास्तविक नियंत्रण चर्च के हाथों में सौंप दिया गया और वैटिकन पर शासनार्थ पोप के अधिकार को मान्यता दी गई। चर्च के प्रमुख अयाजकीय संगठन – कैथॅलिक ऐक्षन को आज़ादी दे दी गई, बषर्ते वह राजनीति से दूर रहे।

वैयक्तिक निरंकुषता और सामाजिक जीवन पर पार्टी का नियंत्रण जर्मनी में और अधिक सख्त था। इटली में, बड़े कारोबार, उद्योग, वित्त, सेना एवं व्यावसायिक अधिकारीतंत्र ने काफ़ी हद तक स्वायत्तता अपने पास ही रखी और फासिज़्म इन स्थापित संस्थाओं व अभिजात वर्गों के साथ एक अनकहे समझौते के आधार पर सत्ता में आया। जर्मनी में शक्तिदायी अधिनियम (इनेब्लिंग एक्ट, मार्च 1933) हिटलर की तानाषाही हेतु कानूनी आधार बन गया। विधायी अधिकार कार्यकारिणी को हस्तांतरित कर दिए गए। अधिकारी तंत्र को राजनीतिक रूप से अवांछित और 'अन-आर्य' तत्त्वों से मुक्त कर दिया गया। राज्य के संघीय स्वरूप को नष्ट कर दिया गया। मूल संवैधानिक अधिकारों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। ''कानून का शासन'' ''नेता का शासन'' में तब्दील हो गया। फ़्युरर जिसके लिए अधिकारी वर्ग और सेना ने 'बिना शर्त आज्ञापालन' की शपथ ली थी, के इतर-कानूनी द्योतन (extra-legal notion) ने प्रषासनिक कार्यकलाप में निर्णायक भूमिका धारण कर ली

और संविधानवाद को दफ़न कर दिए जाने का संकेत दिया। नेता की इच्छा ही कानून की वैधता का आधार हो गयी। न्यायपालिका की स्वतंत्रता पूरी तरह ध्वस्त हो गई। इसके अतिरिक्त, प्रैस पर पूरी तरह नियंत्रण हो गया। उदारवादी और यहूदियों के स्वामित्व वाले समाचार-पत्रों और सोषलिस्ट प्रैस को बंद करने के लिए दबाव डाला गया। फासीवादी अवधारणा के प्रति विरोधात्मक पाये जाने वाले किसी भी साहित्य अथवा कला पर प्रतिबंध लगा दिया गया। प्रचार और षिक्षा के माध्यम से नागरिकों के सांस्कृतिक जीवन पर नियंत्रण नाज़ी शासन-प्रणाली के मुख्य लक्ष्यों में से एक बन गया। पूरी षिक्षा-प्रणाली फासीवादी आदर्षों के अनुसार कायांतरित हो गयी। पाठ्य-पुस्तकें दोबारा लिखी गईं। यहूदियों द्वारा अध्यापन कार्य निषिद्ध कर दिया गया और 'आर्यन्-जर्मन' प्रमुख-जाति सर्वोच्चता संबंधी प्रजातीय सिद्धांत पाठ्यक्रमों का हिस्सा बन गए।

जर्मनी में फासीवादी राज्य ने श्रमिकों को सम्पूर्ण रूप से अनुषासित करने का भी प्रयास किया। मालिकों द्वारा नियुक्त ''न्यासियों'' ने वेतन तय कर दिए। अक्टूबर 1934 में एक श्रमिक मोर्चा बनाया गया। यह किसी मज़दूर संघ की भाँति नहीं, बल्कि एक प्रचार मषीन के माफ़िक काम करता था, और सदस्यों के रूप में नियोक्ताओं और व्यवसायियों को शामिल करता था। महिलाओं के प्रति फासीवादी राज्य का रवैया अति-रूढ़िवादी पितृसत्तात्मक भावनाओं पर आधारित था। महिलाओं की सामाजिक भूमिका को ''किड्स, किचिन एण्ड चर्च'' अर्थात् ''बच्चे, रसोई और गिरजाघर'' आदि नारों से परिभाषित किया गया।

जर्मनी में फासीवादी का सर्वाधिक दमनकारी पहलू यहूदियों का एक योजनाबद्ध उत्पीड़न रहा। जर्मनी में नाज़ी पार्टी की विचारधारा का द्योतन यहूदियों के प्रति तीव्र घृणा और जर्मन प्रमुख जाति को विषुद्ध आर्य बनाए रखने संबंधी तीव्र सनक द्वारा हुआ। यहूदीजन जर्मनी के निकृष्ट, प्रजातीय रूप से अषुद्ध और सभी बुराइयों की जड़ के रूप में रूढ़िबद्ध थे। नागरिकता, विष्वविद्यालयों व प्रषासन में स्थान, आदि से उन्हें वंचित कर दिया गया था। उनके कारोबारों पर हमले भी किए गए। वे सभी प्रकार के अपूर्व भेदभाव के अधीन थे। तदोपरांत, द्वितीय विष्वयुद्ध के दौरान उनमें से लाखों को नज़रबंदी षिविरों में भेज दिया गया और क़त्लेआम कर दिया गया। कम से कम 1937 तक तो इतालवी फासिज़्म में प्रजातीय सामीवाद-विरोध संबंधी किसी भी योजनाबद्ध नीति का ही अभाव रहा। तथापि, नवम्बर 1938 में, इटली में नाज़ियों के प्रभावाधीन, प्रजातीय यहूदी-विरुद्ध कानून भी पास किए गए।

बोध प्रष्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) फासीवादी राज्य और समाज के प्रमुख लक्षणों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

25.6 सारांष

इस इकाई में हमने फासीवादी आन्दोलन और राज्य के मूल लक्षणों, फासिज़्म के उदय हेतु परिस्थितियाँ तैयार करने में युद्ध की भूमिका और उन मूलभूत वैचारिक सूत्रों को जाना जिन्होंने फासिज़्म और उसकी संगठनात्मक शैलियों में योगदान दिया। हमें फासिज़्म को रूढ़िवादी दक्षिणपंथी आन्दोलनों से भिन्न, समाज व उसकी संस्थाओं के पुनर्गठन हेतु दक्षिणपंथी पहलू के रूप में लेना चाहिए। उपनिवेष प्राप्त करने के लिए साम्राज्यिक अभियोजनाओं पर चरम राष्ट्रवाद से जुड़ाव, न्यायपालिका, प्रैस, श्रमिक-संगठनों जैसी संस्थाओं का सम्पूर्ण अधीनीकरण तथा सभी कार्यकारी, विधायी एवं न्यायिक शक्तियों का तानाषाहों के हाथों में संकेन्द्रण, और लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति गहरे जड़ें जमाए शत्रुता, आदि फासीवादी राज्यों के कुछ मुख्य तत्त्व थे। तथापि, स्थानीय विषिष्ट परिस्थितियों की वजह से फासीवादी प्रथाओं के भीतर सूक्ष्म भिन्नताएँ थीं। फासिज़्म कोई सजातीय आन्दोलन नहीं था। इसके अतिरिक्त, यद्यपि राज्य के दमनकारी तंत्र का प्रयोग सभी राजनीतिक विरोधों को दूर करने के लिए किया जाता था, फासिज़्मी राज्य तानाषाह शासन-प्रणालियों की वैधता को क़ायम रखने के लिए कुछ निष्चित कदम भी उठाते थे, बेषक यह वैधता उग्र राष्ट्रवादी और जनवादी प्रजातीय संवेदनाओं पर आधारित रही हो।

25.7 शब्दावली

सामीवाद-विरोध / विरुद्ध : यहूदियों के विरुद्ध पक्षघात

समष्टिवाद : एक अर्ध-समूहवादी पंथ जिसने कर्मचारियों एवं नियोक्ताओं को एक सर्वमान्य संगठन में आबद्ध कर उनके बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने का प्रयास किया।

नागरिक सेना : एक अर्ध-सैनिक संगठन

संघटन : किसी धारणा विषेष के इर्द-गिर्द कार्रवाई हेतु लोगों को तैयार रखना।

सामाजिक-डार्विनवाद : समाज के विकासार्थ डार्विन के विचारों का अनुप्रयोग; यह विष्वास कि समाज में लोग अस्तित्व के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं और केवल सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति, समूह अथवा प्रजातियाँ ही जीतती हैं।

श्रमिक संघवाद : श्रमजीवी संघों अथवा संस्थाओं द्वारा कारखाना स्तर पर विनियमन के माध्यम से उत्पादकों के आत्मोद्धार में विष्वास।

25.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

हेवुड, ए, *की कंसेपट्स इन पॉलिटिक्स*, बॅसिंगस्टोक : मैक्मिलन, 2000

टौक्अर, डब्ल्यू (संपादित), *फासिज़्म : ए रीडरज़ गाइड*, हार्मंड्सवर्थ : पैंग्विन, ब्र्कले, सी ए : कैलिफोर्निया प्रैस, 1979

गोल्ड हेगेन, डी.जी., *हिटलरज़ विलिंग ऐक्ज़ीक्यूष्नरज़ : ऑर्डिनरी जमर्नज़ एंड द होलोकास्ट*: रैंडम हाऊज़, 1996

हेज़, पॉल, *फासिज़्म,* एलेन एंड अनविन, 1973

वैबर, यूगेन, *वैराइटिज़ ऑफ फासिज़्म,* बैन-वैस्ट रैंड रेनहोल्ड, 1964

25.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 25.2 देखें

2) भाग 25.2 देखें

बोध प्रश्न 2

1) भाग 25.3 देखें

2) भाग 25.3, 25.4 और 25.5 देखें

बोध प्रश्न 3

1) भाग 25.5 देखें

इकाई 26 मार्क्सवाद

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देष्य

26.1 प्रस्तावना

26.2 मार्क्सवाद क्या है?

- 26.2.1 काल्पनिक (Utopian) और वैज्ञानिक समाजवाद
- 26.2.2 विकासवादी और क्रांतिवादी समाजवाद

26.3 मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत

- 26.3.1 द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
- 26.3.2 ऐतिहासिक भौतिकवाद
- 26.3.3 अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
- 26.3.4 वर्ग-संघर्ष
- 26.3.5 क्रांति
- 26.3.6 सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व
- 26.3.7 साम्यवाद

26.4 अलगाव का सिद्धांत

26.5 स्वतंत्रता का सिद्धांत

26.6 आलोचनात्मक समीक्षा और अवलोकन

26.7 सारांष

26.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

26.9 बोध प्रष्नों के उत्तर

26.0 उद्देष्य

इस इकाई में आप कार्ल मार्क्स तथा अन्य द्वारा प्रतिपादित मार्क्सवाद के सिद्धांत और व्यवहार के बारे में जान पाएँगे। दर्षन के बुनियादी तत्त्वों, द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग-संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद की विस्तार से चर्चा की गई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- समाजवाद के पूर्व-मार्क्सवाद के सूत्र, जैसे कि काल्पनिक समाजवाद की चर्चा कर पाएँगे;
- मार्क्सवाद के बुनियादी परिकल्पनाओं का आंकलन, वर्णन तथा चर्चा कर सकेंगे;
- मार्क्सवादी सिद्धांत के दूसरे प्रमुख अंगों जैसे अलगाव और स्वतंत्रता के सिद्धांत की विवेचना कर पाएँगे और अंततः; तथा
- मार्क्सवाद की समीक्षा और इसकी समकालीन प्रासंगिकता की विवेचना कर पाएँगे।

26.1 प्रस्तावना

इस इकाई का उद्देष्य मार्क्सवाद के सिद्धांतों का परीक्षण और व्याख्या करना है, जोकि हमारे युग की सबसे क्रांतिकारी विचारधारा है। उदारवाद के साथ मार्क्सवाद हमारे समय के सबसे प्रमुख दर्षन की श्रेणी में आता है। उदारवाद, आदर्षवाद और मार्क्सवाद राजनीति विज्ञान के तीन महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं। सी.एल. वेपर ने राज्य संबंधी विभिन्न विचारधाराओं

को तीन भागों में बाँटा है, जैसे मशीनरी के रूप में, यांत्रिक रूप में और वर्ग के रूप में। दूसरे शब्दों में, राज्य की जैविक विचारधारा, राज्य की यांत्रिक विचारधारा और राज्य की वर्ग संबंधी विचारधारा। जैविक विचारधारा आदर्षवाद है, यांत्रिक विचारधारा उदारवाद है और वर्ग की विचारधारा मार्क्सवाद है।

इस इकाई को मार्क्सवाद की परिभाषा, काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद, क्रांतिकारी और विकासवादी समाजवाद, मार्क्सवाद के मुख्य सिद्धांतों, समीक्षा तथा निष्कर्ष के रूप में विभाजित किया गया है। मार्क्सवाद के सात प्रमुख सिद्धांत हैं, जैसे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद। अलगाव और स्वतंत्रता की अवधारणा जोकि सामन्यतया युवा मार्क्स से संबंधित हैं या मार्क्सवाद के मानवीय मुखौटा की भी चर्चा की गई है।

26.2 मार्क्सवाद क्या है?

मार्क्सवाद सामान्यतया जर्मन दार्षनिक कार्ल मार्क्स के विचारों को दर्षाता है, लेकिन मार्क्सवाद का अर्थ सिर्फ मार्क्स के विचार नहीं हैं। मार्क्सवाद विचारों के उस भाग को प्रकट करता है, जो मुख्य रूप से कार्ल मार्क्स के विचारों को समाहित करते हैं। इसके अंतर्गत मार्क्स, फ्रिडरिष एंगेल्ज़ और उनके समर्थकों के विचार शामिल हैं, जो अपने आप को मार्क्सवादियों के नाम से पुकारते हैं। मार्क्सवाद एक जीवन दर्षन है। मार्क्सवाद विचारक लगातार मार्क्सवादी दर्षन को अपना योगदान देते रहे हैं। इस प्रकार यह कहा जाता है कि मार्क्स मर गये हैं, परन्तु मार्क्सवाद अभी भी जीवित है।

मार्क्सवादी दर्षन काल मार्क्स के जन्म के पहले भी अस्तित्व में था। इसी कारण से डेविड मैक्लेलन ने मार्क्सवाद पर तीन पुस्तकों को लिखा है; *मार्कसिज़्म बिफोर मार्क्स, थॉट ऑफ मार्क्स और मार्कसिज़्म आफ्टर मार्क्स।* उसी प्रकार पोलिष विचार लेसज़ेक कोलाकोस्की ने मार्क्सवाद पर तीन पुस्तकों को लिखा है। यह बात फिर उठती है कि मार्क्सवाद का अर्थ मात्र कार्ल मार्क्स के विचार नहीं हैं।

26.2.1 काल्पनिक (Utopian) और वैज्ञानिक समाजवाद

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, मार्क्सवाद का अस्तित्व मार्क्स से पहले से था। ये पहले के समाजवादी विचारकों के रूप में जाने जाते हैं। कार्ल मार्क्स उन्हें काल्पनिक समाजवादी पुकारते हैं। वे काल्पनिक थे, क्योंकि उनकी सामाजिक बुराइयों की पहचान सही थी, लेकिन उनका निदान गलत था। यह अव्यवहारिक था, अतः वे काल्पनिक कहे जाते थे। जहाँ कोई शोषण नहीं था और लोग खुष थे। यूटोपिया शब्द की उत्पत्ति थॉमस मूर की *यूटोपिया* नामक उपन्यास से हुई। यूटोपिया शब्द एक काल्पनिक द्वीप को सूचित करता है, जहाँ एक दोषरहित सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक प्रणाली का अस्तित्व था; कुछ प्रमुख काल्पनिक समाजवादी विचारक हैं रॉबर्ट ओवेन, चार्ल्स फूरियर, लुइस ब्लां, सेंट साइमन, सिसमोंड़ी और प्राऊधौन।

26.2.2 विकासवादी और क्रांतिवादी समाजवाद

समाजवाद आगे विकासवादी और क्रांतिकारी समाजवाद में विभक्त किया जाता है। विकासवादी समाजवाद क्रांति में विष्वास नहीं करता है और समाजवाद को शांतिप्रिय तरीके से प्राप्त करना चाहता है। विकासवादी समाजवादियों का विष्वास संसदीय प्रजातंत्र में है और वे सामाजिक परिवर्तन मतदान के माध्यम से लाना चाहते हैं। वे हिंसा को त्यागते हैं और इस प्रकार हिंसायुक्त क्रांति के विरोधी हैं। वे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को भी

नहीं स्वीकारते हैं और वर्गयुक्त समाज से वर्गविहीन समाज तक को शांतिप्रिय प्रजातांत्रिक परिवर्तन से लाना चाहते हैं। फेबियन समाजवाद, जितड़ (Guild) समाजवाद और प्रजातांत्रिक समाजवाद विकासवादी समाजवाद के विभिन्न प्रकार हैं।

दूसरी तरफ क्रांतिकारी समाजवाद वर्ग-संघर्ष, क्रांति तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व में विष्वास करता है। उसके अनुसार सामाजिक परिवर्तन शांतिप्रिय ढंग से नहीं हो सकता है, इसे हिंसात्मक होना चाहिए। शांतिप्रिय क्रांति अपने आप में विरोधाभास पैदा करती है। क्रांति सामाजिक परिवर्तन की दाई है और इस क्रांति को अवहम हिंसात्मक होना चाहिए। क्रांतिकारी मार्क्सवाद, कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद के समकक्ष, सामान्यतया समझा जाता है। श्रमिक संघवाद भी क्रांतिकारी समाजवाद का एक रूप है।

विकासवादी समाजवाद भी कार्ल मार्क्स और एंगेल्ज़ की विचारधाराओं में अपने मूल को ढूँढ़ते हैं। उन्होंने राज्य के अपने आप समाप्त होने की बातें की हैं। विकासवादी समाजवाद के प्रतिपादकों ने राज्य के स्वतः विनष्टता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है और तर्क दिया है कि शांतिप्रिय माध्यम से धीरे-धीरे सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित किया जा सकता है और शोषणविहीन और वर्गविहीन समाज की स्थापना की जा सकती है। फिर भी विकासवादी समाजवाद के आलोचक इस धारणा को स्वीकार नहीं करते हैं और तर्क देते हैं कि राज्य के स्वतः विनाष की विचारधारा सिर्फ समाजवादी राज्य या सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व पर लागू होती है और पूँजीवादी राज्य पर नहीं। यह स्वतः विनष्ट नहीं होगा। इसे हिंसात्मक क्रांति के द्वारा नष्ट किया जाना चाहिए। अतः विकासवादी समाजवाद के तर्क में कमी है।

बोध प्रष्न 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) विकासवादी और क्रांतिकारी समाजवाद के अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

26.3 मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत

मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांत इस प्रकार हैं : द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, वर्ग संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व और साम्यवाद। अब, इन सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

26.3.1 द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद इतिहास की व्याख्या के लिए मार्क्स और एंगेल्ज़ द्वारा विकसित वैज्ञानिक विधि है। यहाँ मार्क्स पूर्ववर्ती विचारकों, विषेषतया, जर्मन दार्षनिक हेगेल से पूरी तरह प्रभावित हैं। द्वन्द्वात्मक (Dialectics) एक बहुत पुरानी विधि है, विरोधी विचारने के संघर्ष के माध्यम से विरोधाभासों को व्यक्त करते हुए सत्य को जानने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। हेगेल ने संवाद (Thesis), प्रति-संवाद (Anti-thesis) तथा संष्लेषण (Synthesis) के तीनों रूपों को विकसित करके इसे पेष किया है। द्वन्द्वात्मक त्रिगुण (Dialectical Triad) के नाम से मुख्य रूप से इसे जाना जाता हैं। प्रगति या विकास द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से होता है। विकास की प्रत्येक अवस्था में, यह विरोधाभासों द्वारा वर्गीकृत किया जाता है। ये विरोधाभास आने वाले परिवर्तन, प्रगति और विकास को प्रेरित करते हैं। संवाद को इसके प्रति–संवाद के द्वारा चुनाती दी जाती है। दोनों में सच्चाई और असत्यता क्षणभंगुर होती है। संवाद और प्रति-संवाद के संघर्ष के परिणामस्वरूप, सच्चाई बरकरार रहती है, लेकिन असत्य तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। ये असत्य तत्त्व विरोधाभासों को जन्म देते हैं। संवाद और प्रति-संवाद के सच्चे तत्त्व संष्लेषण में एक साथ मिला दिये जाते हैं। यह विकसित संष्लेषण समय के अंतराल में संवाद बन जाता है और इस प्रकार यह पुनः अपने विरोधी प्रति-संवाद द्वारा चुनौती प्राप्त करता है, जो पुनः संष्लेषण में बदल जाता है। यह संवाद, प्रति-संवाद और संष्लेषण की प्रक्रिया तब तक चलती है, जब तक यह पूर्णता की अवस्था तक नहीं पहुँच जाती है। इस विकासवादी प्रक्रिया में नयी अवस्था आएगी, जब कोई असत्य तत्त्व नहीं होगा। ये विकास के विभिन्न अवस्थाओं में नष्ट हो जाएँगे। अंततः सिर्फ सत्य ही बचता है, क्योंकि यह कभी भी नष्ट नहीं होता है। यह पूर्ण अवस्था को जन्म देगा और कोई विरोधाभास नहीं होगा और इस प्रकार आगे कोई विकास नहीं होगा। द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया का अंत पूर्ण सत्य पर पहुँचने के बाद हो जाएगा। यह विरोधाभास है, जो द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को बढ़ाते हैं और विरोधाभास का पूरा विनाष अपने आप से द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के अंत को सूचित करता है।

भौतिकवाद के लिए मार्क्स भौतिकवाद के फ्रेंच विद्यापीठ, मुख्यतया फ्रेंच भौतिकवादी विचारक लुडविग फ्युरबैक के पूरी तरह से ऋणी हैं। यह पदार्थ है, जो आखिरकार में वास्तविकता है न कि विचार। बाद वाला पहले का प्रतिबिम्ब है। हम कैसे अपनी रोटी कमाते हैं, यह हमारे विचारों को निर्धारित करता है। यह व्यक्तियों की चेतना नहीं होती है, जो उनके अस्तित्व का निर्धारण करती है। इसके विपरीत, यह उनका सामाजिक अस्तित्व होता है, जो उनके चेतन का निर्धारण करता है। मार्क्स ने टिप्पणी की है कि ''हेगेल का द्वन्द्वात्मक अपने सिर के बल खड़ा था और मैंने उसे पैरों पर खड़ा किया है''। हेगेल ने द्वन्द्वात्मक आदर्षवाद का विकास किया है। उनके अनुसार ये विचार हैं, जो अंततः पदार्थ होते हैं। विचार आधार या उप-संरचना में निहीत होता है, जो श्रेष्ठ संरचना में सभी चीज़ों को निर्धारित करता है। समाज, राजनीति और अर्थ व्यवस्था इस श्रेष्ठ संरचना के अंतर्गत हैं, जिसे उस समय के प्रचलित प्रभारी विचारों द्वारा आकार प्रदान किया जाता है। अंततः यही विचार हैं, जो पदार्थ के साथ स्थानांतरित होते हैं। मार्क्स के अनुसार, भौतिक या आर्थिक बल उप-संरचना के अंतर्गत आते हैं और विचार श्रेष्ठ संरचना का एक अंग हैं। विचार भौतिक बलों का प्रतिबिम्ब हैं। आर्थिक बल विचार को निर्धारित करता है और न

कि दोनों को। इस प्रकार मार्क्स ने विचार और पदार्थ की स्थिति को पलट दिया है। यही कारण है कि वे दावा करते हैं कि ''हेगेल का विचार नीचे की ओर झुका हुआ था और मैंने उसे ठीक किया है''।

आधार या उप-संरचना के अंतर्गत उत्पादन का तरीका और उत्पादन के संबंध निहित होते हैं। ये दोनों मिलकर उत्पादन के रूप को जन्म देते हैं। उत्पादन के तरीके में परिवर्तन तकनीकी विकास के कारण होता है, यह उत्पादन के संबंधों में परिवर्तन लाता है। इस प्रकार उत्पादन के रूप के परिवर्तन श्रेष्ठ संरचना में अनुकूल परिवर्तन लाते हैं। समाज, राजनीति, धर्म, नैतिकता, मूल्यों, आदर्षों इत्यादि श्रेष्ठ संरचना के अंग हैं और उत्पादन के रूप द्वारा निर्धारित होते हैं।

26.3.2 ऐतिहासिक भौतिकवाद

ऐतिहासिक भौतिकवाद द्वन्दात्मक भौतिकवाद के प्रयोग में इतिहास की व्याख्या करता है। यह द्वन्दात्मक भौतिकवाद की मार्क्सवादी विधि को लागू करने में विष्व इतिहास की आर्थिक व्याख्या करता है। विष्व इतिहास को चार अवस्थाओं में बांटा गया है : प्रारम्भिक साम्यवाद, दास प्रथा, सामंतवाद और पूँजीवाद।

प्रारम्भिक साम्यवाद, मानव इतिहास के सबसे प्रारम्भिक काल को सूचित करता है। यह काल सम्पत्तिविहीन, शोषणविहीन, वर्गविहीन और 'राज्यविहीन समाज था। उत्पादन के साधन पिछड़े हुअे थे, क्योंकि तकनीकी अविकसित थी। समुदाय उत्पादन के साधनों का स्वामी था। वे निजी स्वामीतत्व के अंतर्गत नहीं थे और कोई शोषण नहीं था। षिकार के लिये पत्थर के हथियार, मछली फंसाने के जाल और अंकुड़ी (hooks) उत्पादन के साधन थे। समूचा समुदाय इनका स्वामी था। उत्पादन सीमित था और स्व-खपत के लिए किया जाता था। कोई अतिरिक्त उत्पादन नहीं था, तो कोई शोषण नहीं था। जब कोई शोषण नहीं था तो कोई वर्ग विभाजन नहीं था। जब कोई वर्ग विभाजन नहीं था, तो कोई वर्ग संघर्ष नहीं था, तो कोई राज्य नहीं था। इस प्रकार यह साम्यवादी समाज था, लेकिन अदिकालीन प्रकार का था। फिर भी ज़िन्दगी कठिन थी। इसे शोषण, कलह और संघर्ष के अभाव के द्वारा निर्धारित किया जाता था।

तकनीक स्थिर नहीं है; यह लगातार विकसित होती है। तकनीकी विकास उत्पादन में सुधार के लिए होता है। जिससे अतिरिक्त उत्पादन होता है, जो व्यक्तिगत् सम्पत्ति का आर्विभाव करता है। अब उत्पादन के साधन समुदाय के अंतर्गत नही होते हैं, बल्कि निजी स्वामित्व के अंतर्गत आ जाते है। इस प्रकार समाज सम्पत्तिवालों और सम्पत्तिविहीन वर्गों में बंट जाता है। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होने की वजह से सम्पत्ति वाले वर्ग सम्पत्तिविहीन वर्ग का शोषण करते हैं। चूँकि संघर्ष होता है, प्रभावी वर्ग, यानि की सम्पत्ति वाला वर्ग राज्य नाम की एक दमनकारी संस्था का निर्माण करते हैं, जोकि अर्धानस्थ की यानि कि सम्पत्तिहीन वर्ग के विरोध को कुचलता है। इस प्रकार राज्य एक वर्ग यंत्र और दमनकारी संस्था है। यह अपने निर्माता के हितों की रक्षा करता है, जो सम्पत्तिवाले वर्ग हैं।

प्रारम्भ में इस समाज को स्वामी और गुलाम के रूप में बांटा गया है। स्वामी सम्पत्तिवाले (the haves) हैं और गुलाम सम्पत्तिविहीन (the have nots) हैं। गुलाम उत्पादन के सारे कार्य को करते हैं। स्वामी गुलामों की मेहनत पर जीते हैं। वे गुलामों का शोषण करते हैं और जब कभी गुलाम विरोध करते हैं, तब राज्य स्वामी के बचाव में आता है। इस प्रकार, राज्य स्वामी वर्ग के हितों की रक्षा करता है। यह अपनी दमनकारी शक्तियों से गुलामों की आवाज़ को दबाता है।

दास प्रथा का सामंतवाद अनुगामी बन जाता है। तकनीकी विकास उत्पादन के साधन में परिवर्तन लाता है और यह उत्पादन और श्रेष्ठ संरचना के संबंध में अनुकूल परिवर्तन लाता है। दास प्रथा उत्पादन के सामंती ढ़ांचे में परिवर्तित हो जाता है और यह समाज, राजनीति, नैतिकता और मूल्य प्रणाली में झलकता है। समाज का सामंतों और किसानों में विभाजन सामंतवाद को दर्षाता है। सामंतों का उत्पादन के साधनों पर अधिपत्य होता है, यह भूमि है, लेकिन किसान उत्पादन कार्य करता है। भूमिध्य का स्वामित्व होने के कारण, सामंत बिना कुछ किये उत्पादन का बड़ा हिस्सा प्राप्त करता है। इस प्रकार सामंत परजीवी (parasite) के सामान होता है, जो किसानों की मेहनत पर संपन्न होता हैं। सामंत किसानों का शोषण करता है और यदि किसान कभी अपने शोषण का विरोध करता है, तो उसके विरोध को राज्य निर्दयता से कुचल देता है, क्योंकि राज्य सामंतो के हितों की रक्षा और उनकी सेवा करता है। जहाँ किसान आश्रित और शोषित वर्ग होता है, वहीं स्वामी प्रभावी और शोषक वर्ग होता है।

पूँजीवाद सामंतवाद का अनुगामी होता है। तकनीकी विकास जारी रहता है, इसलिए उत्पादन की षिक्तियों में परिवर्तन होता है, जो उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों के बीच बेमेल हो जाता है, जिसका समाधान मध्य वर्ग (bourgeois) की क्रांति से होता है। इस प्रकार उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन का सामंती ढाँचा पूँजीवादी ढाँचे में बदल जाता है। समाज का मध्य वर्ग और सर्वहारा वर्ग में विभाजन पूँजीवाद को दर्षाता है। मध्य वर्ग का उत्पादन के साधनों पर अधिकार होता है, लेकिन सर्वहारा वर्ग उत्पादन करता है। सर्वहारा लोग औद्योगिक श्रमिक होते हैं; वे कम वेतन के बदले अपना श्रम बेचते हैं। यह व्यवहारतः आजीविका के लिए वेतन होता है, जिससे श्रम शक्ति को अबाधित आपूर्ति को बरकरार रखा जा सकता है। उत्पादन स्वयं के खपत के लिए नहीं होता है, बल्कि मुनाफे के लिए होता है। अधिकतम मुनाफे की इच्छा वेतन में कमी और कार्यविधि में बढ़ोत्तरी करती है। यह आगे श्रमिक वर्ग की स्थिति को बिगाड़ता है, जो अंततः उन्हें इस स्थिति में पहुँचा देता हैं, जहाँ खोने के लिए कुछ नहीं होता है। यह सर्वहारा क्रांति के लिए मार्ग प्रषस्त करता है।

बोध प्रष्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) द्वन्दात्मक भौतिकवाद के अर्थ को अपने शब्दों में व्यक्त करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रारम्भिक साम्यवाद या सामंतवाद के मुख्य विषेषताओं की गणना और वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

26.3.3 अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत

मार्क्स ने पूँजीवादी समाज में शोषण की व्याख्या करने के लिए अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत को विकसित किया है। यहाँ मार्क्स वर्गीय अर्थषास्त्रियों के सिद्धांतों से प्रभावित थे। वे मूल्य के श्रम सिद्धांत से सहमत थे। सामान का मूल्य इसके उत्पादन में लगे श्रम की मात्रा से आंका जाता है। श्रम भी एक सामान है। इसे दूसरे सामानों की तरह खरीदा और बेचा जा सकता है। उत्पादन के चार कारकों में श्रम सबसे सर्वोच्च है। इसके अभाव में उत्पादन के दूसरे कारक बेकार हैं। भूमि पूँजी और संगठन उत्पादन के अन्य दूसरे कारक बेकार हैं। भूमि पूँजी और संगठन उत्पादन के अन्य दूसरे कारक हैं। उत्पादन के इन कारकों के लिए श्रम का प्रयोग होता है, जो उन्हें उत्पादक बनाता है। श्रम के अभाव में वे बंजर होते हैं।

यदि वेतन श्रमिक द्वारा उत्पन्न की गयी रकम के अनुपात में दिया जाता है, तो कोई शोषण नहीं होता है, लेकिन यह अवस्था पूँजीवाद में नयी होती हैं। श्रम इस अर्थ में अनोखा होता है कि यह अपने रख-रखाव से ज़्यादा मूल्य उत्पन्न करता है। श्रमिक द्वारा उत्पन्न किये गये मूल्य तथा श्रमिकों को वेतन के रूप में दिए गए मूल्य में अंतर होता है, जिससे अतिरिक्त मूल्य उत्पन्न तथा पूँजीपति को मुनाफा होता है। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई श्रमिक एक महीने में 25,000 रुपये मूल्य उत्पन्न करता है और उसे वेतन के रूप में 15,000 रुपये दिये जाते हैं, तो बचे हुए 10,000 रुपये पूँजीवादी का लाभ होगा। इस प्रकार श्रमिक सदैव अधिक मूल्य पैदा करते हैं, जितना उसे वास्तव में मिलता है। श्रमिक द्वारा उत्पन्न यह अतिरिक्त मूल्य मध्यवर्ग (bourgeois) का लाभ होता है, जिसका बचाव वर्गीय अर्थषास्त्री करते हैं, क्योंकि यह संपत्ति संग्रह करता है, जिसे आगे नये उद्योगों तथा उपक्रमों में लगाया जाता है और जिससे विकास और खुषहाली आती है। मार्क्सवादियों के अनुसार, यह श्रमिकों का शोषण हैं, जिसे समाप्त किया जाना चाहिए।

पूँजीवाद के विकास और प्रतियोगिता में बढ़ोतरी होने से श्रमिकों के वेतन में लगातार गिरावट आती है और आजीविका स्तर की अवस्था आ जाती है। आजीविका वेतन रहने और श्रम शक्ति के स्थायीकरण के लिए न्यूनतम वेतन होता है। इस प्रकार पूँजीवाद में गहन प्रतियोगिता सर्वहारा की अति क्षति का सूचक होता है। यह वर्ग संघर्ष को बढ़ावा देता है और अंततः क्रांति को लाता है।

26.3.4 वर्ग-संघर्ष

मार्क्स के अनुसार, अभी तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। सिवाय प्रारम्भिक साम्यवादी अवस्था को छोड़कर सभी ऐतिहासिक कालों में प्रभावी और आश्रित वर्गों या सम्पत्ति वाले और सम्पत्तिविहीन के बीच सक्रिय विरोध रहा है। यह सक्रिय

विरोध वर्ग विरोधाभासों से पैदा होता है; यह सम्पत्तिविहीन वर्ग का सम्पत्ति वाले वर्ग द्वारा शोषण के परिणामस्वरूप होता है। पूरे इतिहास में प्रत्येक युग में दो विरोधी वर्ग रहे हैं। दास प्रथा में स्वामी और दास, सामंतवादी प्रथा में सामंत और मध्य वर्ग उत्पादन के साधनों के स्वामी हैं। दास, किसान और सर्वहारा उत्पादन करते हैं, लेकिन उनके उत्पाद को उनके शोषकों के द्वारा ले लिया जाता है और बदले में उन्हें सिर्फ़ दैनिक गुज़ारे के लिए वेतन देते हैं। उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होने के कारण सम्पत्ति वाले वर्ग सम्पत्तिविहीन का शोषण करते हैं। यही वर्ग संघर्ष का मुख्य स्रोत और कारण हैं। विरोधी वर्गों के बीच कोई समझौता या मेल संभव नहीं है। प्रत्येक युग में विरोधी वर्गों के अन्तर्निहित विरोधाभासों को सिर्फ़ शोषित वर्गों के सर्वनाष से सुलझाया जा सकता है।

26.3.5 क्रांति

वर्ग संघर्ष क्रांति के लिए मार्ग प्रषस्त करता है। वर्ग संघर्ष अतींद्रिय (imperaceptible) होता है, लेकिन क्रांति अनुभवगम्य (perceptible) होती है। वर्ग संघर्ष की तीव्रता क्रांति के लिए आधार का निर्माण करती है। वर्ग संघर्ष लम्बे समय तक चलने वाली गतिविधि है, लेकिन क्रांति थोड़े समय के लिए तेज़ी से और हिंसात्सक होती है। मार्क्स के शब्दों में ''क्रांति सामाजिक परिवर्तन की आवष्यक दाई होती है''। सामंती क्रांति ने दास प्रथा को खत्म कर दिया, मध्यवर्गीय क्रांति ने सामंतवाद को खत्म किया और सर्वहारा क्रांति पूँजीवाद का अंत करेगी। इस प्रकार किसी भी युग में सामाजिक परिवर्तन सदैव क्रांति के द्वारा किया जाता है।

क्रांति होती है, जब उत्पादन की शक्तियों या साधनों और उत्पादन के संबंधों के बीच असामंजस्य होता है। इस असमांजस्य का सामाधान करने के लिए क्रांति होती है, जो उत्पादन के साधनों या शक्तियों के साथ सामंजस्य लाने के लिए उत्पादन के संबंधों और श्रेष्ठ सरंचना में अनुकूल परिवर्तन लाती है। तकनीकी विकास उत्पादन के साधनों में परिवर्तन लाता है। हस्तषिल्प आपको सामंती समाज प्रदान करते हैं और आपचालित (steam) मिल, औद्योगिक पूँजीवादी समाज देते है।

सर्वहारा क्रांति इतिहास के वार्षिकी वृत्तांत में अंतिम क्रांति होगी। क्रांति विरोधाभासों के समाधान के लिए होती है। इसलिए क्रांति नहीं होगी, यदि समाज में कोई विरोधाभास नहीं होगा। सर्वहारा क्रांति के बाद, आगे कोई क्रांति नहीं होगी, क्योंकि कोई विरोधाभास नहीं होगा फिर भी, क्रांति तब होगी, केवल जब उत्पादन की शक्तियां पूरी तरह परिपक्व हो जायेंगी और उत्पादन के संबंधों से मेल नहीं खायेंगी। क्रांति इस बेमेल का अंत करती है।

सामाजिक विकास के क्रम और दिषा को परिवर्त्तित नहीं किया जा सकता है। कोई भी अवस्था दूसरी अवस्था को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती है। कोई भी अवस्था छोटी-परिधि वाली नही हो सकती है। प्रारम्भिक साम्यवाद से दास प्रथा, दास प्रथा से सामंतवाद और सामंतवाद से पूँजीवाद सर्वहारा का अधिनायकत्व या समाजवाद पूँजीवाद पर विजय प्राप्त करेगा, जो सामाजिक विकास की अंतिम से पहली अवस्था होती है। सर्वहारा का अधिनायकत्व अंततः साम्यवाद की स्थापना करेगा। सर्वहारा क्रांति के साथ, क्रांति का स्वतः अंत हो जाएगा।

26.3.6 सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व

सर्वहारा क्रांति सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना करेगी। यह समाजवादी राज्य के नाम से भी जानी जाती है। मध्यवर्ग द्वारा उत्पन्न राज्य के अंग, सर्वहारा के दबाने वालों को, सर्वहारा मध्य वर्ग के विरुद्ध राज्य के यंत्र का इस्तेमाल करेगा। मध्य वर्ग पुरानी व्यवस्था

को पुनः प्राप्त करने के लिए विरोधी-क्रांति करने की कोषिष करेगा और इस प्रकार राज्य की दमनकारी संस्थाओं द्वारा मध्य वर्ग को नियंत्रित करने की आवष्यकता होती है।

राज्य सदैव दमन का साधन रहा है। प्रभावी वर्ग ने आश्रित वर्ग पर दमन करने के लिए राज्य की उत्पत्ति की है। यह एक वर्ग साधन है। राज्य रक्षा करता है और अपने निर्माता के हितों का ख्याल करता है, जो सम्पत्ति संपन्न वर्ग होता है। यह वर्ग सदैव अल्पसंख्यक रहा है, चाहे वह स्वामी या सामंत या पूँजीपति हो। इस प्रकार अल्पसंख्यक बहुसंख्यक का शोषण करते रहे हैं, जैसे गुलामों या किसानों या सर्वहारा का राज्य के दमनकारी अंगों द्वारा। सर्वहारा के अधिनायकत्व के अंतर्गत, पहली बार राज्य बहुसंख्यक के नियंत्रण में आता है। अब पहली बार राज्य के दमनकारी यंत्र का उपयोग बहुसंख्यक के विरुद्ध अल्पसंख्यक द्वारा होता है।

मार्क्स के अनुसार सभी राज्यों का अधिनायकत्व रहा है। अतः समाजवादी राज्य कोई अपवाद नहीं है। यह भी एक अधिनायकत्व है। राज्य का इस्तेमाल सदैव एक वर्ग का दूसरे वर्ग को दबाने के लिए किया जाता रहा है। समाजवादी राज्य में सर्वहारा वर्ग राज्य के दमनकारी अंगों जैसे सेना, पुलिस, जेल, न्यायिक प्रणाली इत्यादि का प्रयोग मध्य वर्ग के विरुद्ध करेगा। मार्क्स तर्क देते हैं कि यदि प्रजातंत्र का अर्थ बहुसंख्यक का शासन होता है, तो सर्वहारा राज्य सबसे प्रजातांत्रिक राज्य है क्योंकि पहली बार इतिहास के वार्षिकी में सत्ता बहुसंख्यक के हाथों में आती है। सर्वहारा राज्य के पहले, सत्ता बहुसंख्यक के हाथों में आती है। सर्वहारा राज्य के पहले, सत्ता सदैव अल्पसंख्यकों के हाथों में रही है। इसलिए यदि बहुमत का शासन मापदंड हैं, तो मात्र सर्वहारा राज्य ही प्रजातांत्रिक राज्य कहा जा सकता है।

26.3.7 साम्यवाद

सर्वहारा के अधिनायकत्व की जीवित देखभाल के अंतर्गत, समाजवादी राज्य साम्यवाद के रूप में उभरेगा। समाजवाद का क्षणभंगुर अवस्था है। यह साम्यवाद से संभावित उद्‌भव का रास्ता प्रषस्त करेगा, जो स्थिर और स्थायी होता है। यह सामाजिक विकास का काल होगा। साम्यवाद की स्थापना के बाद आगे कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं होगा। द्वन्दात्मक प्रक्रिया का अंत हो जाएगा। एक पूर्ण, विवेकषील सामाजिक प्रणाली की स्थापना होगी जो कि शत्रुओं और विरोधाभासों से मुक्त होगी। कोई वर्ग विरोधाभास नहीं होगा, इसलिए कोई वर्ग संघर्ष नहीं होगा। वास्तव में साम्यवाद वर्गविहीन, निजी सम्पत्तिविहीन और शोषणविहीन समाज होगा।

साम्यवाद समाज में उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व के रूप में कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी। उत्पादन के साधनों पर समुदाय का स्वामित्व होगा। सहयोग न कि प्रतियोगिता साम्यवादी समाज का आधार होगा। उत्पादन खपत के लिए होगा न कि मुनाफा कमाने के लिए; मुनाफे की प्रवृत्ति सामाजिक आवष्यकताओं में बदल जाएगी। जब कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी, तो कोई शोषण नहीं होगा। जब कोई शोषण नही होगा, तो कोई वर्ग विभाजन, कोई सम्पत्ति सम्पन्न और सम्पत्तिविहीन वर्ग, या कोई प्रभावी और आश्रित वर्ग नहीं होगा। जब कोई वर्ग विभाजन नहीं होता है, तो कोई वर्ग संघर्ष नहीं होता है, इसलिए राज्य की आवष्यकता नहीं होती है। इस कारण से साम्यवादी समाज वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज होगा।

राज्य शोषण का मंत्र होता है, यह वर्ग यंत्र होता है, परिणामस्वरूप समाज में वर्ग विभाजन होता है। साम्यवाद में श्रमिकों का मात्र एक वर्ग होता है, कोई दूसरा वर्ग दबाने और दमन करने के लिए नहीं होता है, अतः राज्य की कोई आवष्यकता नहीं होगी। यह साम्यवादी

समाज में फालतू बन जाएगा। इसे संग्राहालय को सौंप दिया जाएगा। राज्य फिर भी खत्म नहीं होगा। यह धीरे-धीरे विलीन हो जाएगा।

साम्यवादी समाज लुईस ब्लां (Louise Blanc) के सिद्धांत – 'प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करेंगें और प्रत्येक की अपनी आवष्यकता के अनुसार प्राप्त होगा,' – के अनुसार शासित होगा। परजीवियों के लिए कोई स्थान नहीं होगा। जो काम नहीं करेगा, वह खायेगा नहीं। सिर्फ श्रमिकों का एक वर्ग होगा। समूचा समाज श्रमिक वर्ग में बदल जायेगा। शोषण का कोई स्थान नहीं होगा। यह समतावादी समाज होगा। लोगों के बीच सद्भावपूर्ण संबंध होगा।

बोध प्रष्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) वर्ग संघर्ष की अवधारणा की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) साम्यवादी समाज की प्रमुख विषेषताओं का वर्णन तथा मूल्यांकन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

26.4 अलगाव का सिद्धांत

मार्क्सवादी दर्षन में दो विषिष्ट काल रहे हैं। 1844 का *इक्नॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैन्युस्क्रिप्टस* मार्क्सवाद के मानवीय चेहरे को उजागर करता है। इसमें बिना वर्ग शत्रुता, वर्ग संघर्ष तथा हिंसात्मक क्रांति के संदर्भ के पूँजीवाद को विष्लेषित किया गया है। यहाँ पूँजीवाद के बुरे प्रभावों की अलगाव, पहचान और स्वतंत्रता के खोने के आधार पर व्याख्या की गयी है। मार्क्स के इन दृष्टिकोणों को युवा मार्क्स के साथ जोड़ा जाता हैं। 1848 के साम्यवादी कम्युनिस्ट *मैनिफैस्टो* में मार्क्स के दर्षन में एक बदलाव देखने को मिलता है। बाद का मार्क्स परिपक्व मार्क्स के नाम से जाना जाता है, जिन्होंने वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांत की स्थापना की। मार्क्स के प्रारम्भिक विचारों को सिर्फ 1932 में प्रकाषन के साथ ही जाना गया था।

अलगाव का सिद्धांत एक मार्क्सवादी अवधारणा है। हंगेरियन मार्क्सवादी जार्ज लुकास ने 1932 के प्रकाषन के पहले ही पूरी तरह से अपने बलबूते अलगाव के सिद्धांत को विकसित किया है। फिर भी अलगाव की अवधारणा मैन्युस्क्रिप्टस प्रकाषन के बाद ही लोकप्रिय बनी। मार्क्स ने अलगाव के चार स्तरों का ज़िक्र किया है। सर्वप्रथम मनुष्य अपने उत्पाद और काय प्रक्रिया से अलग-थलग पड़ जाता है, क्योंकि श्रमिक की कैसे उत्पादन करे। द्वितीय व्यक्ति प्रकृति से अलग हो जाता है। उसका कार्य उसे एक रचनात्मक श्रमिक के रूप में संतोष प्रदान नहीं करता है। यांत्रिकीकरण के अन्तर्गत, कार्य तेज़ी से समयबद्ध और उबानेवाला बनता जा रहा है। तीसरे, व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अलग से हो जाता है। पूँजीवादी प्रणाली का प्रतियोगी चरित्र प्रत्येक को अन्य के खर्च पर जीने को मजबूर कर एक दूसरे से अलग कर देता है। आखिरकार व्यक्ति स्वयं से कट जाता है। आवष्यकता का क्षेत्र उसके जीवन को काबू करता है और सांस्कृतिक विरासत के लिए कोई समय नहीं होता है। पूँजीवादी प्रणाली पूँजी और सम्पत्ति के निजी स्वामित्व के द्वारा उत्पन्न अवस्थाओं को सभी मानवीय संकायों और क्षमताओं में अधीनस्थत करती है। पूँजीपति अपने आप में श्रमिक से कम नहीं होता है, लेकिन पैसे के निरंकुष शासन का गुलाम बन जाता है।

26.5 स्वतंत्रता का सिद्धांत

मानववादी दर्षन के रूप में मार्क्सवाद मुख्यतया मानव स्वतन्त्रता का दर्षन है। स्वतन्त्रता न सिर्फ मानवीय आवष्यकताओं की भौतिक संतृष्टता है, बल्कि अमानवीयकरण, संबंध विच्छेद और अलगाव की अवस्थाओं को दूर करना भी है। पूँजीवादी प्रणाली आवष्यकता को स्वतंत्रता के विरोधी के रूप में वर्गीकृत करती है। आवष्यकता उन अवस्थाओं को सूचित करती है, जिसके अंतर्गत प्रकृति के अनिवार्य नियम व्यक्ति के जीवन को शासित करते हैं। प्रकृति के इन नियमों में मानव इच्छा की स्वतंत्रता निहित होती है। व्यक्ति इन नियमों के वैज्ञानिक ज्ञान को प्राप्त कर सकता है, लेकिन उन्हें अपनी इच्छा से बदल नहीं सकता है। स्वतंत्रता आवष्यकता से अलग हट नहीं सकती है। स्वतन्त्रता प्रकृति के इन नियमों के ज्ञान में निहित होती है और इन नियमों को क्षमता प्रदान करने जो मानव समाज के स्वतन्त्रता के निष्चित लक्ष्य की ओर कार्य करता है।

इस प्रकार पूँजीवादी प्रणाली को चलाने वाली उत्पादक शक्तियों का ठोस ज्ञान और एक कार्यक्रम, आवष्यकता की राजधानी से स्वतन्त्रता की राजधानी तक मानवीय परिवर्तन को निष्पादन करेगा। मानव समाज की स्वतंत्रता और सच्ची स्वतन्त्रता का अनुभव सिर्फ पूँजीवाद के विनाष और साम्यवाद की स्थापना से ही संभव होता है।

बोध प्रश्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) आप अलगाव के सिद्धांत या स्वतन्त्रता के सिद्धांत का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

26.6 आलोचनात्मक समीक्षा और अवलोकन

मार्क्सवाद कठोर आलोचना का विषय रहा है। इसने समाज को दो वर्गों, जिनके पास कुछ (the haves) और जिनके पास कुछ नहीं है (the have-nots) में विभाजित किया है। यह वास्तविकता से दूर है। समाज बहुत जटिल होता है और कुई समूहों में बंटा होता है। जैसे कि मार्क्सवाद की परिकल्पना है, वैसा कोई स्पष्ट वर्गों का विभाजन नहीं होता है। ज्यादातर, इसमें विषाल मध्य वर्ग होता है। मार्क्सवादी विचारकों ने भविष्यवाणी की थी कि पूँजीवाद के विकास के साथ, मध्य वर्ग विलीन हो जाएगा और सर्वहारा वर्ग के साथ मिल जाएगा लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ है और ऐसा होने की कोई संभावना नहीं है। वास्तव में इसके विपरीत हुआ है; मध्य वर्ग ने अपनी स्थिति को मजबूत किया है और अपने आकार को बढ़ाया है। मार्क्सवादियों ने पूँजीपति वर्ग के सिमटने की बातें की थीं। यहाँ पुनः ठीक इसके विपरीत हुआ है। सिमटने के बदले पूँजीपति वर्ग का आधार विस्तृत हुआ है। मार्क्स ने पूँजी संग्रह की बात की थी, लेकिन पूँजी का बिखराव हो गया है। सर्वहारा वर्ग की स्थिति वैसी नहीं बिगड़ी है, जैसे कि मार्क्स ने भविष्यवाणी की थी। इस प्रकार, पूँजीवाद की वास्तविक कार्यकारी प्रणाली ने वर्गों के मार्क्सवादी सिद्धांत को गलत साबित किया है।

मार्क्सवादियों ने भविष्यवाणी की थी कि पूँजीवाद अन्तर्विरोध के कारण बिखर जाएगा। लेकिन, अभी तक ऐसा घटित नहीं हुआ है। कोई विकसित पूँजीवादी व्यवस्था ध्वस्त नहीं हुई है। पूँजीवाद ने अपने लचीलेपन को साबित किया है। दूसरी ओर, समाजवादी व्यवस्था, दुनिया के विभिन्न भागों में ध्वस्त हो गयी है। पूँजीवाद के पास सामंजस्य बिठाने की अपार शक्ति है। यही इसके जीवंत होने का मुख्य कारण है। मार्क्स पूँजीवाद का सही आंकलन करने में असफल रहे हैं।

मार्क्स के अनुसार, सर्वहारा क्रांति तभी होगी, जब पूँजीवाद परिपक्व हो जायेगा। पिछड़े सामंतवादी समाज में सर्वहारा क्रांति के घटित और सफल होने का अवसर नहीं होता है। लेकिन वास्तव में यही घटित हुआ है। क्रांति सिर्फ सामंतवादी समाजों जैसे रूस, चीन, वियतनाम, क्यूबा इत्यादि देषों में हुई हैं। यह रूसी मार्क्सवादियों के दो गुटों, प्लैखनॉव (Plekhnov) के नेतृत्व में मैंषेविक्स (Mensheviks) और लेनिन के नेतृत्व में बॉलषेविक्स (Bolsheviks) के बीच विवाद का मुख्य मुद्दा था। अंततः बॉलषेविक्स का मैनषेविक्स के

ऊपर वर्चस्व रहा, लेकिन वे मार्क्स के विचारों के अधिक नज़दीक थे। मार्क्स के अनुसार, उनके विचार सामाजिक विकास के जन्म की वेदना को कम कर सकते हैं, लेकिन किसी भी अवस्था को नज़रअंदाज नहीं कर सकते। फिर भी लेनिन और ट्रॉटस्की ने रूस में और माओ ने चीन में पूँजीवाद की स्थापना की प्रक्रिया से गुज़रे बिना सामंतवादी समाज में साम्यवाद की स्थापना की। इस प्रत्यक्ष विरोधाभास के समाधान के लिए ट्रॉटस्की ने *थ्योरी ऑफ परमानेंट रिवॉल्युषन,* को विकसित किया। उन्होंने अपने सिद्धांत में मध्यवर्ग की क्रांति को सर्वहारा की क्रांति के साथ मिला दिया। ये दोनों क्रांतियां ट्रॉटस्की की दृष्टि में साथ-साथ घट सकती हैं। यद्यपि यह अधिक व्यवहारिक विचार प्रतीत होता है, यह मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांतों को नहीं स्वीकार करता है।

आर्थिक निर्धारकवाद के मार्क्सवादी सिद्धांत की कठोर आलोचना की गयी है। यह सिर्फ आर्थिक कारक ही नहीं होता है, बल्कि दूसरे कारक भी सामाजिक परिवर्तन लाने में समान रूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं। यदि अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज, नैतिकता, मूल्य प्रणाली इत्यादि को निर्धारित करती है, तब अर्थव्यवस्था भी अपने आप इनके द्वारा निर्धारित होती है। यह दो तरफा प्रक्रिया है। आर्थिक शक्तियाँ राजनीति, समाज, संस्कृति, धर्म, मूल्यों, आदर्षों इत्यादि के प्रभावों से अछूती नहीं है। यदि आधार या नींव अधिरचना को आकार देते हैं, तो अधिरचना भी नींव को आकार देती है। इस प्रकार आर्थिक निर्धारकवाद के सिद्धांत को स्वीकारा नहीं जा सकता है। बाद के मार्क्सवादी विचारकों, जैसे कि ग्रामसी ने अधिरचना की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया।

सर्वहारा का अधिनायकत्व और साम्यवाद की मार्क्सवादी अवधारणाओं, में कई कमियाँ हैं। सर्वहारा क्रांति के बाद सर्वहारा मध्य वर्ग से राज्य की मषीनरी को छीन लेगा। साम्यवाद की स्थापना के बाद राज्य फालतू हो जाएगा और धीरे-धीरे विलीन हो जाएगा। यह घटित नहीं हुआ है। समाजवादी समाज में राज्य वास्तव में सर्व-षक्तिमान बन गया। कमज़ोर होने के बदले राज्य ने अपनी स्थिति दृढ़ बना ली है और इसके मुरझाने की कोई संभावना नहीं है। राज्य समाजवादी और मार्क्सवादी समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा और इसे संग्रहालय को कभी भी सौंपे जाने की कोई संभावना नहीं है।

समाजवादी समाज की जहाँ कहीं भी स्थापना की गयीं है, या तो उसे उतार फेंका गया या नज़रअंदाज किया गया है। जहाँ कहीं भी यह अभी भी जीवित है, इसे बहुत सारे परिवर्त्तन करने के लिए मजबूर होना पड़ा है, जो वर्गीय मार्क्सवाद की विचारधारा से मेल नहीं खाता है। पूर्वी यूरोप में सामयवाद की असफलता, रूस में बिखराव और चीन में आर्थिक सुधारों ने फ्रांसिस फुकुयामा सरीखे विचारकों को मार्क्सवाद की ऑबिटयुरी (obituary) लिखने को बाध्य किया है। फुकुयामा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *एण्ड ऑफ हिस्ट्री* में शीतमुद्रा कालीन संसार (post-coldwar) में साम्यवाद के ऊपर पूँजीवाद की विजय का दावा किया है। उनके अनुसार पूँजीवाद की साम्यवाद पर विजय, इतिहास के अंत को दर्षाता है। यहाँ फुकुयामा हेगेल के अर्थ में इतिहास की बात करते हैं। पूँजीवाद के बाद आगे कोई आर्थिक और राजनीतिक विकास नहीं होगा। पूँजीवाद सबसे विवेकषील और पूर्ण प्रणाली है। यह सबसे पूर्ण विचारधारा और दर्षन है। इसलिए, वैचारिक और दार्षनिक विकास का अंत पूँजीवाद के उद्‌भव के साथ ही हो जाता है। इसका मुख्य चुनौतीकर्त्ता साम्यवाद पराजित हो गया है और यह आगे अपने दावों को साबित करता है कि यह मानवता द्वारा कभी भी विकसित प्रणालियों में से सबसे उत्तम सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली है।

फुकुयामा के द्वारा दिए गए सिद्धांत को स्वीकार करना बहुत ही कठिन है। मार्क्सवाद की प्रमुखता दो क्षेत्रों में निहित है। सर्वप्रथम, इसे सामाजिक विष्लेषण का एक कारक बनाया

गया है। द्वितीय, यह आवाज़विहीन को आवाज़ देता है। यह गरीबों, उत्पीड़ित और दमित लोगों का दर्षन हैं। यदि मार्क्सवाद की देन का विष्लेषण इन दोनों क्षेत्रों के संदर्भ में किया जाये तो, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि यह अभी भी प्रासंगिक है और फिजूल नहीं है, जैसा कि उदारवादी आलोचकों द्वारा दावा किया जाता है। सामाजिक विष्लेषण के एक आयाम के रूप में मार्क्सवाद आज भी प्रासंगिक है, जैसा कि यह पहले था। सामाजिक विष्लेषण की एक विधि के रूप में इसका महत्त्व कभी भी समाप्त नहीं होगा, चाहे सामाजवादी राज्य जीवित रहता है या समाप्त हो जाता है।

मार्क्सवाद एक विचारधारा के रूप में अपनी श्रेष्ठता निष्चियतया खो चुका है, लेकिन यह पूरी तरह से फालतू नहीं है। जब तक शोषण रहेगा, लोगों का दमन और उत्पीड़न होता रहेगा, मार्क्सवाद प्रासंगिक बना रहेगा। मार्क्सवाद, शोषित और उत्पीड़ित के दर्षन के रूप में उनकी मुक्ति के लिए जनता को प्रेरित करता रहेगा। इसलिए, इसकी पराजय और अप्रासंगिकता का प्रष्न नहीं है। वास्तव में, प्रणालियाँ जो बिखर चुकी हैं, वे वर्गीय मार्क्सवादी सिद्धांतों पर संगठित नहीं थी। वे मार्क्सवादी-लेनिनवाद और स्टालिनवाद से अलग थीं। इसलिए यह लेनिनवादी-स्टालिनवादी प्रणालियाँ है, जो यूरोप और जहाँ कहीं भी वे हैं, बिखर चुकी हैं और जो वर्गीय मार्क्सवाद नहीं है।

मार्क्सवाद एक आयाम के रूप में सामाजिक विष्लेषण के लिए विद्वानों के द्वारा उपयोग किया जाता रहेगा और शोषित-दमित लोग अपनी मुक्ति के लिए मार्क्सवादी दर्षन का समर्थन करते रहेंगें। यहाँ मार्क्सवाद कभी भी अप्रासंगिक नहीं बनेगा। यह सदैव उदारवाद का वैकल्पिक दर्षन बना रहेगा। मार्क्सवाद उदारवाद के अत्याचारों पर प्रभावकारी रोक के रूप में भी कार्य करेगा। यह पूँजीवादी प्रणाली की कठोरता को कम करेगा।

बोध प्रष्न 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अन्त देखें।

1) मार्क्सवादी सिद्धांत पर प्रहार के प्रमुख आधारों की विवेचना करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) मार्क्सवाद की समकालीन प्रासंगिकता का परीक्षण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

26.7 सारांष

इस इकाई में हमने विभिन्न प्रकार के समाजवाद जैसे काल्पनिक और वैज्ञानिक समाजवाद, विकासवादी तथा क्रांतिकारी समाजवाद की चर्चा की है। मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांतों जैसे द्वन्दात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, अतिरिक्त मूल्य, वर्ग संघर्ष, क्रांति, सर्वहारा का अधिनायकत्व और साम्यवाद की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गयी है। ये सिद्धांत वैज्ञानिक और क्रांतिकारी समाजवाद के आधार का निर्माण करते हैं। मार्क्सवाद मात्र वर्ग विद्वेष, वर्ग संघर्ष, वर्ग विरोध और हिंसात्मक क्रांति का दर्षन नहीं है। यह बुनियादी तौर पर मानवता और स्वतन्त्रता का दर्षन है। पूँजीवादी समाज ने संबंध-विच्छेद, विलगाव और पहचान और स्वतंत्रता के विनाष को बढ़ावा दिया है। हम मार्क्स के मानवीय चेहरे को उनके प्रारम्भिक लेखों में, विषेषकर उनके *इक्नॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैन्यूस्क्रिपट्स ऑफ 1844* में पाते हैं। विलगाव और स्वतंन्त्रता के सिद्धांत में, हम मानववादी मार्क्स को पाते हैं। साम्यवादी घोषणा पत्र और *दास कैपिटल* में, जो कि उनके बाद के लेखन हैं, उसमें हम एक परिपक्व और क्रांतिकारी मार्क्स को पाते हैं। इस प्रकार युवा और मानवादी मार्क्स और परिपक्व और क्रांतिकारी, दो मार्क्स हैं। फिर भी, दोनों के बीच कोई विभाजन नहीं हैं। दोनों के मध्य विचारों का प्रवाह है, और इसलिए कोई भी भिन्नता छिछोली है।

मार्क्सवाद एक जीवंत दर्षन है। मार्क्स के बाद इसे लेनिन, ट्रॉटस्की, स्टैलिन, रोज़ा लग्जंमबर्ग, ग्राम्सी, लुकास, ऐलथूज़ैर, माओ आदि विचारकों ने समृद्ध किया है। विचारधारा और इतिहास के अंत के प्रतिपादकों ने मार्क्सवाद के, उल्लेख खत्म होने का किया है। लेकिन मार्क्सवाद सामाजिक विष्लेषण के एक आयाम और उत्पीड़ित वर्ग के दर्षन के रूप में प्रासंगिक रहेगा। यह जनमानस को उनकी मुक्ति के लिए संघर्ष हेतु प्रेरित करेगा। मार्क्सवाद एक क्रांतिकारी दर्षन है। यह एक सामाजिक परिवर्तन का दर्षन है। मार्क्स के शब्दों में, दार्षनिकों ने विष्व की व्याख्या का प्रयास किया है, पर सवाल है इसे बदलने का इसका उद्देष्य एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के शोषण से मुक्त समतावादी समाज की स्थापना करना है। सिर्फ मार्क्सवाद के माध्यम से, शायद मानवता आवष्यकता के क्षेत्र से स्वतन्त्रता के क्षेत्र तक बढ़ेगी।

26.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ऐविनेरी, श्लोमों, *द सोषल एण्ड पॉलिटिकल थॉट ऑफ कार्ल मार्क्स,* कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971

बर्लिन, इज़ाइया, *कार्ल मार्क्स : हिज़ लाईफ एण्ड ऐनवाइरमैंट,* न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996

फुकुयामा, फ्रांसिस, *दी एण्ड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्ट मैन,* न्यू यार्क, फ्री प्रेस, 1992

टकर, रॉबर्ट, *फिलॉस्फी एण्ड मिथ ऑफ कार्ल मार्क्स,* कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1961

मैकक्लेलैंड़, जे.एस., *ए हिस्ट्री ऑफ वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट,* लंदन, राऊटलेज, 1996

26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उप-भाग 26.3.1 और 26.32 देखें

बोध प्रश्न 2

1) उप-भाग 26.4.1 देखें

2) उप-भाग 26.4.2 देखें

बोध प्रश्न 3

1) उप-भाग 26.4.3 देखें

2) उप-भाग 26.4.4 देखें

3) उप-भाग 26.4.7 देखें

बोध प्रश्न 4

1) भाग 26.5 और 26.6 देखें

बोध प्रश्न 5

1) भाग 26.7 देखें